



मानुषीमिह संस्कृतम्

# रिदेह

१३. मङ्ग २००८ रर्ष १ मास ३ अंक १०

'रिदेह' १३. मङ्ग २००८ (रर्ष १ मास ३ अंक १०)एहि अंकमे अङ्कि:-



१.नो अङ्की: मा अरिगे श्री उदय नावायण सिंह 'नचिकेता'

मैथिनी साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककार श्री नचिकेतजीक ठैठका नाटक, जे रिगत २५ रर्षक मौनभंगक पश्चात् पाठकक समूथ अस्तुत भ' बहन अङ्कि । सरप्रथम रिदेहमे एकवा धावाराहिक कर्पे अ-प्रकाशित कएन जा बहन अङ्कि । पठू नाटकक दोसब कल्लानक पहिन खेप ।

२. शोध लेख: मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (आगाँ)

३. उपन्यास सहस्ररौढनि (आगाँ)

४. महाकार महाभावत (आगाँ) अ. कथा(हूसि-हठक)

५. पद्य अ. रिसुत करि सु. वामजी चौधरी.



आ. श्री गणेशे गुजन.



अ. ज्योति मा चौधरी

आ. अ. गजेन्द्र ठाकुर

७. संस्कृत -मैथिनी शिक्षा(आगाँ)


८. मिथिना कना(आगाँ)



मानुषीमिह संस्कृताम्

६.पारैनि ( जानकी नरमी पव रिशेष)- नूतन सा

१०. संगीत शिक्षा 1१. रौनाना छते- रँगियाक गाढ

१२. पङ्गी प्ररँध (खागाँ) पङ्गी-संग्राहक श्री रिद्यानंद सा पङ्गीकाव (प्रसिद्ध मोहनजी )

१३. संस्कृत मिथिना १४ भाषापक १५. बचना लेखन (खागाँ)

१७ VI DEHA FOR NON RESIDENT MAI TH I L S

VI DEHA M TH I L A T I RBHUKTI T I RHUT..

महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) रिस्यूत करि झ. वामजी चौधरी (1878-1952)पव शोध-लेख रिदेहक पहिल अंकमे अ-प्रकाशित भेल छन। तकव रौद हनकव पुत्र श्री दुर्गानन्द चौधरी, ग्राम-कदम्ब, थाना-अधवा-ठाढ़ १, जिना-मधुवनी करिजीक अ-प्रकाशित पाल्दुनिपि रिदेह कार्यालयकेँ डाकसँ रिदेहमे प्रकाशनार्थ पठौनहि अछि। अ गौठ-पचासक पत्र रिदेहमे नरम अंकसँ धावाराहिक रूपेँ अ-प्रकाशित भ' बहन अछि।

महत्त्वपूर्ण सूचना:(२) 'रिदेह' द्वारा कएन गेल शोधक आधाव पव मैथिनी-अंग्रेजी आऽ अंग्रेजी-मैथिनी शिद्ध कोशि (संपादक गजेन्द्र ठाकुर आऽ नागेन्द्र कृमाव सा) प्रकाशित कवरौउन जा' बहन अछि। प्रकाशकक, प्रकाशिन तिथिक, प्रसुक-प्राप्तिक रिधिक आऽ पौथीक मूल्यक सूचना एहि पृष्ठ पव शीघ्र देन जायत।

महत्त्वपूर्ण सूचना:(३) 'रिदेह' द्वारा धावाराहिक रूपेँ अ-प्रकाशित कएन जा' बहन गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्ररौहनि'(उपन्यास), 'गम्प-गुड'(कथा संग्रह), 'भानसवि' (पद्य संग्रह), 'रौनाना छते', 'एकाङ्की संग्रह', 'महाभावत' 'रुँह चवित' (महाकार्य)आऽ 'यात्रा वृत्तांत' रिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशिनक रौद प्रिठ फॉर्ममे प्रकाशित होएत। प्रकाशकक, प्रकाशिन तिथिक, प्रसुक-प्राप्तिक रिधिक आऽ पौथीक मूल्यक सूचना एहि पृष्ठ पव शीघ्र देन जायत।

महत्त्वपूर्ण सूचना(४): श्री आद्याचरण सा, श्री प्रहल्ल कृमाव सिंह 'मौन' श्री केनाशि कृमाव मिश्र (गँदिवा गँधी वास्त्रीय कना केन्द्र), श्री ग्राम सा आऽ डाँ. श्री शिर प्रसाद यादर जीक सम्मति आऽयन अछि आऽ हिनकव सभक बचना अगिना १-२ अंकक रौदसँ 'रिदेह'



मानुषीमिह संस्कृतम्

मे ङ-प्रकाशित होमय नागत ।



महत्त्वपूर्ण सूचना(३): २० म शताब्दीक सर्वश्रेष्ठ मिथिना बने श्री वामाश्रिय मा 'वामवर्ग' जिनका लोक 'अभिनर भातखण्ड' केव नामसँ सेहो सोब करैत छन्हि, 'रिदेह' केव हेतु अपन संदेशे पठौने छथि आह ताहि आधाव पब हुनकव जीरन आह प्रतिक रिषयमे रिस्तुत निरर्थ रिदेहक संगीत शिक्षा सुंभमे ङ-प्रकाशित कवरौक हमवा लोकनिके सौभाग्य भेठन अछि ।

रिदेह (दिनांक १३ मङ्ग, २००८)

संपादकीय

वर्ष: १ मास: ३ अंक: १०

मान्यवर,

रिदेहक नर अंक (अंक १० दिनांक १३ मङ्ग २००८) ङ परिवर्शि भ बहन अछि । एहि हेतु नाँग ऑन कक <http://www.videha.co.in> |

अहाँकेँ सूचित करैत हर्ष भ बहन अछि, जे 'रिदेह' प्रथम मेथिली पाष्किक ङ पत्रिका केव १० ठाँ अंक <http://www.videha.co.in> पब ङ-प्रकाशित भ चूकन अछि । गँठबनेठ पब ङ-प्रकाशित कवरौक उद्देश्य छन एकठाँ एहन हॉवम केव स्थापना जाहिमे लेखक आ पाठकक रीच एकठाँ एहन माध्याम होए जे कतहूसँ चौरौसो घंटा आ सातौ दिन उपनद्ध होए । जाहिमे प्रकाशिनक नियमितता होए आ जाहिसँ रिचवण केव समझा आ भौगोनिक दूरीक अंत भ जाय । हेलव सूचना-प्रौद्योगिकीक फ्लेवमे हातिक हनस्रकप एकठाँ नर पाठक आ लेखक रञ्जक हेतु, पबान पाठक आ लेखकक संग, हॉवम प्रदान कएनाग सेहो एकव उद्देश्य छन । एहि हेतु दू ठाँ काज भेन । नर अंकक संग पबान अंक सेहो देन जा बहन अछि । पबान अंक pdf स्वरूपमे डाउनलोड कएन जा सकैत अछि आ जतए गँठबनेठक स्पीड कम छैक रा गँठबनेठ महग छैक ओतह ग्राहक रँड्र कम समयमे 'रिदेह' केव पबान अंकक हागन डाउनलोड कए अपन कंप्यूटरमे स्वरक्षित बाधि सकैत छथि आ अपना सुरिधानुसारे एकवा पढि सकैत छथि । एकव अतिविज संपर्क खोज सुंभमे रिदेह आ आन-आन मिथिना आ मेथिलीसँ संरंधित सागठमे सर्च हेतु सर्च गँजिन रिक्सित कए बाखन गेन अछि । ओहि पृष्ठा पब मिथिना आ मेथिलीसँ संरंधित समाचावक निक रिक्सित कए सेहो बाखन गेन अछि । संपर्क-खोज पृष्ठा पब मिथिना आ मेथिलीसँ संरंधित सागठक संकननकेँ आव दृढ कएन गेन अछि । रिदेहक सभ पृष्ठाकेँ १० निपिमे देखन जा सकैत अछि आ ताहि हेतु सभ पृष्ठा पब निक देन गेन अछि । भाषा मेथिलीमे बहत ह्रदा आन भाषा-भाषी मेथिलीक आनंद अपन निपिमे पठि कए नए सकैत छथि ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

नचिकेतोजी अपन २३ सानक चूपी तोड़ि लो अंठी: मा शरिषे नाठक मेथिनीक पाठकक समझ रिदेह  
अ-पत्रिकाक माध्यमसँ पहुँचा बहन छथि । धावाराहिक कँपे अ नाठक रिदेहमे अ-प्रकाशित भ बहन  
अछि ।

३ जूनकेँ एहि लेब रठ सारित्री अछि । एहि अरसब पब एहिसँ संरक्षित निरंध देन जा' बहन अछि । एहि  
निरंधक लेखिका छथि श्रीमति नूतन मा ।

रौनार्ना प्रतेमे रंगियाक गाछ शीर्षक लोककथारकेँ ज्योतिजीक चित्रसँ सुसज्जित कएन गेन अछि ।

श्री गंगेशी गुजन जीक करिता पाठकक समझ अछि ।

श्री प्रहल्लु फुमाव सिंह मोन, श्री आद्याचवण मा आ२ डाँ. श्री शिर प्रसाद यादर जीक सम्मति आयन अछि  
आ२ रिदेहमे एक-दू अकक रौद हिनकर सभक बचना रिदेहक पाठकक लोकनिक समझ आरंभ नागत ।

मिथिनाक बने सुँभकेँ नाम आ' रथसँ जतय तक संभर भ' सकन रिभूषित कएन गेन अछि । एकब  
परिवर्धनक हेतु सुमार आमंत्रित अछि । मिथिना बनेमे रैकग्राउन्ड संगीत सेहो अछि, आ' अछि  
रिधरक प्रथम वास्तुभक्ति गीत (शुकन यजुर्देद अध्याय २२, मंत्र २२) जकवा मिथिनामे दूरस्थित आशीषी  
मंत्र सेहो कहन जागत अछि, एकब अर्थ रिदेह आकजिअर सुँभमे अतिनर कपमे देन गेन अछि, आ'  
त्रिभुक्त देन अर्थसँ एकब भिन्नता देखाउन गेन अछि । अथा पृथक रैकग्राउन्ड संगीत रिद्योपतिक रँड  
सुख साव तँ अछिये पहिनेसँ ।

'रिदेह' अ पत्रिकाक प्रचाव सर्च अजिन द्वावा, गुगन आ' याहू ग्रुप द्वावा, रडप्रेस आ' र्नॉगस्पॉठमे  
देनगेन र्नॉग द्वावा, फेसबुक, आउठनूक, माय स्पस, ओवकठ आ' चिष्टाजगतक माध्यमसँ कएन गेन ।  
अदा जखन डाठा देखनहुँ तँ आधसँ रेशी पाठक सोमे <http://www.videha.co.in> पता ठाँगप कए  
एहि अ-पत्रिकारकेँ पढनहि ।

अपनेक बचना आ' प्रतिधियाक प्रतीक्षामे । रविष्ठा बचनाकाब अपन बचना हस्तनिधित कपमे सेहो नीचाँ  
निखन पता पब पठा सकैत छथि ।

गजेन्द्र ठाकुर

389, पॉकेट-सी, सेकठ-ए, रंसुतुंज, नर देहनी-११००१०.

फ़ैकल: ०११-४११११२३.

१३ मअ २००८ नर देहनी

<http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

[ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in)

[ggajendra@yahoo.co.in](mailto:ggajendra@yahoo.co.in)

(C)२००८. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन ।

रिदेह (पाष्किक) संपादक- गजेन्द्र ठाकुर । एतय प्रकाशित बचना सबक कॉपीवागठ लेखक लोकनिक नगमे बहतहि, मात्र एकब प्रथम प्रकाशिनक/आकांगरक/अग्रज्जी-संस्कृत अनुवादक अधिकार एहि आ पत्रिकारकेँ छेक । बचनाकाब अपन मौनिक आ अप्रकाशित बचना (जेकरब मौनिकताक संपूर्ण उद्भवदायिन्न लेखक गणक मधा छुनि) [ggajendra@yahoo.co.in](mailto:ggajendra@yahoo.co.in) आकि [ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) केँ मेन अछेचमोठक रूपसेँ .doc, .docx आ .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब अपन सम्बन्धित पविचय आ अपन स्केन कएन गेन फ्लैटे पठैतह, से आनिा करैत छी । बचनाक अतमे ठागप बहय, जे आ बचना मौनिक अछि, आ पहिन प्रकाशिनक हेतु रिदेह (पाष्किक) आ पत्रिकारकेँ देन जा बहन अछि । मेन प्राप्त होयरीक बाद यथासंभव शीघ्र ( सात दिनक भीतब) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देन जायत । एहि आ पत्रिकारकेँ शीघ्रति नम्मा ठाकुर द्वारा मासक १ आ १५ तिथिकेँ आ प्रकाशित कएन जायत अछि ।

## १. नाटक



श्री उदय नावायण सिंह 'नचिकेता' जन्म-१९५१ आ. कनकग्रामे । १९६६ मे १५ वर्षक उम्रमे पहिन कारा संग्रह 'करयो रदन्ति' / १९७१ 'अमृतस्य पत्राः'(करिता संकनन) आ 'नायकक नाम जीरन'(नाटक) / १९७४ मे 'एक छन बाजा'/नाटकक नेन'(नाटक) । १९७६-७७ 'प्रवारुर्जन'/ 'वामनीना'(नाटक) । १९७८मे जनक आ अग्र्य एकांकी । १९८१ 'अनुभवण'(करिता-संकनन) । १९८८ 'प्रियंरदा' (नाटिका) । १९९७-'वरीन्द्रनाथक रौन-



मानुषीमिह संस्कृतम्

साहित्य'(अनुवाद) । 1998 'अनुष्ठति'- आधुनिक मैथिली करिताक रँगनामे अनुवाद, संगहि रँगनामे दूठा करिता संकनन । 1999 'अग्नि ओ पवित्रास' । 2002 'खाम खेयानी' । 2006मे 'मध्यमप्रकष एकरचन'(करिता संग्रह । भाषा-रिज्ञानक क्षेत्रमे दसठा पौथी आ' दू समयसँ रेशी शोध-पत्र प्रकाशित । 14 ठी पी.एच.डी. आ' 29 ठी एम.फिन. शोध-कर्मक दिशा निर्देशे । रङ्गोदा, सुवत, दिल्ली आ' हैदराबाद रि.रि.मे अध्यापन । संप्रति निदेशक, केन्द्रीय भावतीय भाषा संस्थान, मैसूर ।

नो अंठी : मा प्रशि

(चावि-अकीय

मैथिली नाठक)

नाठककाव उदय नावायण सिंह 'नचिकेता' निदेशक, केन्द्रीय भावतीय भाषा संस्थान, मैसूर

(मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाठककाव श्री नचिकेतजीक ठठका नाठक, जे रिगत 25 रर्यक मौन लंगक पश्चात् पाठकक समुख प्रस्तुत भ बहन अछि । )

दोसब कल्लानक पहिन भाग जावी....रिदेहक एहि दसम अंक १३ मङ्ग २००८ मे ।

## दोसब कल्लान पहिन खेप

### दोसब कल्लान

[पश्चादपठ मे सुत्रा-द्वारे नखा दैछु कदा मंचक एक दिसि द्वाबक राम भागक देरौव नग एकठा भाषण देरौ जोकब कनेक डूँच भाषण-मंच आ ताहि पब एकठा माङ्गक देखन जायत । भाषण-मंच पब तीनठा नीक कर्मी देखन





मानुषीमिह संस्कृतम्

जायत । ओमहव दवरँज्जाक सामने था भाषण-मंचक नग  
राँगस-चौरूस-ठी भाड्ा केव फूसी सेहो बाखन बहत  
जाहि पव चावि-ठी मृत सैनिक सँ न कए चावि-गोष्ठ  
राँजा रँजेनिहाव था प्रथम कल्लान मे देखन सरँ गोष्ठे -  
नंदी- भुंगी केँ न कए चोदहो गोष्ठे रँसन प्रतीक्षा  
करैत छथि । नगेछ सरँ का प्रतीक्षा करैत-करैत  
परेशान भ गेन छथि । ]

खनुचव-1

: (नेताजी एखनहू धरि नहि थायन छनाह । हुनक  
दृष्टी खनुचव मे सँ एक गोष्ठे कहना माँगक पव किछ ने  
किछ रँजरँक प्रयास क बहन छन - जाहि सँ नोग डुरि  
कए कतहू सबकि ने जाय ! ) त' भाँग - रँहिन सरँ !  
जे हम कह छनहू... खाजूक एहि खशीतिमय परिवेशि मे  
एकमात्र रँदवीये राँरू छथि जे शीतिक दूत रँनि कए  
मथिने मात्र नहि, समस्त भावतक खातंकरादी, कनेसरादी,  
उग्ररादी, खलूग्ररादी, चंडरादी, प्रचंडरादी सँ न कए सरँ  
तबहक रिरादीक मगड्ा-रिरादकेँ मेठैरँक नेन  
द्विचक्रयान सँ न कए राहयान धरि , सभ तबहक  
राहन मे खंत कष्ट था जोखिम उठा कए सहब करैत  
बहनाह । था खहिना सरँ ठाम... सगरे, खपन राँतक  
जादूँ छड्ाकेँ चनरैत सभक दुःख- दर्द केँ दूब  
करैत बहनाह । मिथिनाक महान नेता एक रँदी-रिशान  
सिंहे छथि जे...

राजावी :  
रूमनियह फ़दा

(परेशान भ कए) हो, से सरँठा त'

ग़ त' रँतार' जे रँदी राँरू छथि कत' ?



रौमा-रौरु : खाब कतेक देव प्रतीक्षा कवय पडाछ  
?

खनुचव 2 : जे भाषण-मंचक कोना पब ठाटा वहेत  
खुछि खा

रौच-रौच मे उतवि कए रौहव जा कए माकि कए  
देखरौक प्रयास क कए घुवि-घुवि खरौत छन । ) हे,  
खारि खारिये बहन हेताह !

राजारी : हे हो ! गयेह रात त' हम सर  
रडारी कान सँ सुनि

बहन छियह ! “खारि खारिये बहन छथि...”

रौमा-रौरु : खा रैसन रैसन पैब मे रघा नागि बहन  
खुछि...हमवा सँ त' रैसी देव धवि रैसने नहि  
जागत खुछि ।

खनुचव 1 : (सर केँ शीत करैत) हे...रात सुनू... रात सुनू

भाग-सर ! रैसि जाड, कने शीत भ' कए रैसन ने  
जाग जाड !

खनुचव 2 : (रैजराक भंगिमा सँ स्पष्ट भ जागत छनि  
जे हुमि रौजि बहन छथि-) कनिये कान पूरि ओ धर्म-  
शिना हिनकाँपठव पब सँ उतवन छथि । खारि ओ वास्ता  
मे छथि- कखनहु पहुँचि सकै छथि... !





मानुषीमिह संस्कृतम्

खनुचव 1 : खारँ जखन ओ खारिंये बहन छथि, प्रायः पहुँचिये

गेन छथि, खजूक समय-समन्नय-सामान्यजन

खा चाक्कात चनि बहन खनाचाव दय रँद्री रँरँकेँ

की कहँरँक छनि, से स्रनेत जाय जाँ !

रँजारी : खछा त' कह' ने कोन नर रँत कहँ' !

खनुचव1 : ओना खही कियेक हम सँ चहि छी जे सँ किछ

नर हो... ! वास्ता नर हो, ओ पथ जतय पहुँचत से

नस्य नर हो, एहन पथ पब सँ चननिहाव हमबा-

खहाँ सनक पबनका जमानाक नोग मात्र नथि -

नरीन हगक नरतुबिया सँ हो ! पबतन ग्लानि,

पबना दुःख-दर्द सँ, प्राचीने गतिहासक पृथ पब

हमसँ ओनबायन जकाँ मात्र ठाँ नहि बही,

किछ नर कबी... !

रँमा-रँरँ : ओ रँत त' ठीके कहि बहन छी ।

भद्र रँजि : (दू गोरँ) 'ठीक, ठीक ! एकदम  
ठीक', खादि ।

खनुचव1 : खा गयेह रँत रँद्री रिशान रँरँ सेहो रँजेत  
छथि-



मानुषीमिह संस्कृतम्

रिशान जनिक द्वादय, श्रम-जीरी मनुष्यक नेन  
जनिक द्वादय सँ सदिखन बज मरै छनि, जनिका  
नेन पवनका लोक, बीति-बेराज ततरे महत्पूर्ण  
जतरा नरयोरनक ज्वाब, नरीन पीठकीक आशा-  
आकांक्षा - ज्ञा सरँ किछ । आजूक हग मे रैह एकठा  
बाजनेता छथि जे नर आ पवानक रीच मे एकठा  
सेतु रैनन स्रयं ठाठ छथि आ ओ सेतु जेना  
कहि बहन हो---

आँ पवतन, आँ हे नूतन ।  
हे नरयोरन, आँ सनातन । ।  
प्राण-पवायण, जीर्ण जवायन ।  
रँज-कठिन प्रण गौण गवायन । ।  
स्वतन्त्र स्वधन स्वथ सँ गायन ।  
जीर्ण ज्ञा धवणी तठ्ठकथ त्रायन । ।  
अघन सधन मन धन-दुख-दायन ।  
जाँ पवतन, आँ नरायन । ।

एहन उक्रेष्ट कारा-पाठ सुनि बद्दी-रँना आ भिख-मंगनी  
प्रशंसा सूचक “राह-राह” कहत तानी रँजारँ नागौ



मानुषीमिह संस्कृतम्

छथि । त हिनका दूनु केँ देखि खनुचव २ खा नंदी-भुंगी  
केँ छोडाँ रौकी सरँ सोठेँ तानी रँजारँ नागेत  
छथि । ]

चोव : (नगमे रँसन वददी-रँना केँ)  
हे... किछ रँमनह

एकव करिता कि खाहिना ? (वददी-रँना खाँथि उठा  
कए मात्र देखेत खछि, जित्तासा खाँथि मे...) हमबा  
त' किछ नहि रँम' मे खायन ।

वददी-रँना : नर किछ भवि जिनगी केँने बहित' तखन  
ने ? एहि ठामक

मान ओम्हव...खा ओहि ठामक एम्हव... !

भिख-मंगनी : ठीके त' ! तौँ कोना रँमरँह ?

चोव : पहिन दूठा पाँती त' रँमिये गेन  
छनहँ । झदा तकव

रौद सरँठा हहेम जकाँ खस्पु...एस्तक नरीन छन

जे रँम' मे नहि खायन !

खनुचव २ : हे ! के हन्ना क' बहन छी ?

भिख-मंगनी : हे ग्रा चोवरी कहे छन...



मानुषीमिह संस्कृतम्

चोब : (डाँटेत) चूप ! भिख-मंगनी  
नहितन...हमबा 'चोब'

कहये !

भिख-मंगनी : हाय गौ माय ! 'चोब' के 'चोब' नहि  
कहरै त' की

कहू ? कौन नर नामे रँजाडू ?

खन्नचव 1 : (मांगक सँ, कनेक सब केँ कर्कशि करैत) हे  
खहाँ

सरँ एक दोसबा सँ नगडाँ नहि कर ! जे किछ

रँतिखारँक खडि, हमरे सँ पछू ! (भिख-मंगनी केँ

देखा कए) हे खहाँ... (भिख-मंगनी एम्हव-ओम्हव

देखैत खडि) हँ,हँ - खनी केँ कह छी ! रँजु...की

रँजे छनहँ ? पहिने रँजु- खहाँ के छी ?

चोब : (रिहँसैत) भिख-मंग- (राका अधूरे बहि  
जागत

छनि, कियेक त' भिख-मंगनी नपठि कए चोबक

झँह पव हाथ ध दैत खडि-रँकी रँजे नहि  
दैछ । )

(तारत दूनु खन्नचव नपठि-नपठि देखि कए,

"हे...हे... !" कहैत मना कवरँक प्रयास मे खण्णखा  
खरैत खडि । )



मानुषीमिह संस्कृतम्

भिख-मंगनी : (चोबक झूठ पब सँ अपन हाथ केँ  
हँठारैत, ठाठः

भ' कए अपन परिचय दैत, कने नजरैत...) हमब  
नाम भेन 'खनसूया ! '

खनुचब 1 : खछा, खछा ! त' अहाँ अरुष्ट श्रमजरी रक्काक  
छी...सह नागैत खछि !

भिख-मंगनी : हँ !

खनुचब 2 : कौन ठाम घब भेन ?

भिख-मंगनी : घब त' भेन सबिसरपारी...झदा,

खनुचब 2 : झदा ?

भिख-मंगनी : बहे छनहँ दिन्नी मे... खसोक नगब रँसुी  
मे...

खनुचब 1 : आ' काज कौन करैत छनहँ रँहिन ?

भिख-मंगनी : गेन त' छनहँ मिथिना चित्रकनाक हूब न'  
कए,

अपन रँनायन किछु प्रति रँच' नेन... झदा,...

(दीर्घ-श्रास लागि) के जाने छन, जे ओ शहर

एहन छन जत' कना-तना केब कौनो कदब  
नहि... अतत: हमबा कौनो चोबाहाक भिख-मंगनी  
रँना कए



मानुषीमिह संस्कृतम्

छोडाँ दैनक ।

खनुचव 2 : खा-हा-हा,जा त' योव खन्याय भेन खहाँक संग ।  
योव

खन्याय... खरुव भ' गेन !

खनुचव 1 : (प्रयास करैत प्रसंगकेँ रँदनेत छथि- गना

खखाडाँ कए) झदा जा नहि रँतेनहँ जे खहाँ कह'

की चाहित छनहँ ?

भिख-मंगनी : हमबा नागन, खहाँ जे राँत कहि बहन  
छनहँ ताहि

मे रँहूत किछु नर छन, तकव खनारे-

बददी-रँना : हमबा सरँ केँ त' रँम' मे कोनो  
दिक्रति नहि

भेन, झदा

खनुचव 2 : झदा ?

भिख-मंगनी : (चोव केँ देखा कए) हिनकव कहँ छनि  
जे मात्र

पहिन दूँठा पाँतीक अर्थ स्पष्ट छन, खा तकव

रँद...

खनुचव 1 : ओ...खरँ रँमनहँ । भ' सकैछ...जा भ' सकैछ  
जे



मानुषीमिह संस्कृतम्

किनको-किनको हमब मभक रज्जरा कठिन था

नहि त' थपाच्य नगनि । ङा मंभर थद्धि जे हिनका

नेन नर-प्रवानक मंत्रा किद्ध थारे...

रौत पूवा हौराक पूरे बद्दी-रना था भिख-मंगनी  
हंसि दैत थद्धि...मंगहि उँचका था राजावी सेहो ।  
थन्नचव-

द्वय रूमि नहि परैत छथि जे ओसरँ कियेक हंसि बहन

छनाह । / कियेक ? की भेन ? हम किद्ध गनत  
कहनहँ

की ?

बद्दी-रना : थहाँ कियेक गनत रा हूमि राजरँ ?

भिख-मंगनी : थहाँ त' उँचिते कहनियेक ।

राजावी : अदा हिनका पूद्धि कए त' देखू-ङा कौन  
तबहक सेरा

मे निहज्ज छथि !

थन्नचव 2 : [थन्नचव-द्वय रूमि नहि परैत छथि जे की  
कहतह । ]

क.. कियेक ?

थन्नचव 1 : (चोब मँ) की सरँ राजि बहन छथि ङा-  
सरँ ?





[चोब शीत-चिह्नं उठि कए ठाठ होगत अछि आ भाषण-  
मंचक दिसि आगाँ रँटैत जागत अछि । अंत मे मंच पब  
चटाँ कए रँजैत छथि...]

चोब : (अन्नचव 1 कै) जँ अ चाहे छी हमब उतव  
स्वरँ, आ जँ मञ्ज

किछ नर स्वरँ चाहे  
छी तखन हमबा कनीकान मांगक सँ  
राजे देमे  
पडाँ ।

(अन्नचव-द्वय कै चप देखि) कछु की रिचाव !

अन्नचव 1 : (नरसँ ल जागत छथि) हँ-हँ, किये  
नत्रि ?

चोब : [मांगक हाथ मे पारि चोब कर्ता केव आसुनि  
आदि समठैत एकठा दीर्घ भाषणक नेन  
प्रसुत होगत

छथि । ] अहाँ सरँ आश्चर्यचकित हँ आ भविसक परेशान

सेहो, जे हम कोन नर राँत कहि सकरँ । [अन्नचव-

द्वय कै अपन परिचय दैत] आखिब छी त' हम एकठा  
सामान्य चोबे, छोट-छीन चोबि करैत छनहँ, झुदा भूनो  
सँ ककबहु ने जान नेने छी आ ने आघाते केने छी ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

चोबि केँ हम खपन कर्म आ धर्म रूमेत छनहँ – आ जेना हमब तान जकाँ छन हमबा कोनो रँडकाँ खपबाध सँ रँचैरौक ! सोटे छनहँ जे चोबि, माने तस्कबता – एकठाँ डुँच दर्जा केब कना सह थिक । सामान्य भद्र र्याजिक नेन एतेक सहजे आ काज संभर नहि भ' सकैत छनि । (दूनु भद्र र्याजिकेँ देखा कए) हिनके दूनु केँ देखिठन ने...त' हमब राँत रूमि जायरँ । (हँसैत) हिनका दूनुक समझ कोनो नोभनीय रसु बाधि दियन... तैयह, गछा होगतह आ नोकनि ओहि रसु केँ न' कए चम्पत् नहि भ' सकैत छथि । (गँभीर झुद्रामे) कहरौक तापेर्य आ जे जेना मिथिना चित्रकना एकठाँ कना थिक, चोबि कबरँ सेहो चोँसठि कनाक भीतब एकठाँ कना होगत छि ।

खनुचब 2 : माननहँ । आ मानि गेनहँ जे चौर्यकना एकठाँ

महत्पूर्ण रूति थिक, मात्र प्ररूति नहि । झुद्रा...

चोब : (हनक राँत केँ जेना हरा मे नोकि नैत छथि) झुद्रा आ

प्रश्न उठि सकैत छि जे हम चोबि कबिते किएक छी ?

रिशेष...तखन, जखन कि परिवारबमे का छुट्टिये नहि.. तखन एहन कार्य खथरा कनाक प्रयोगक कोन प्रयोजन छन ?

राजाबी : ठीक !



मानुषीमिह संस्कृतम्

चोब : जँ खान-खान रूति मल दय सोची त' ङा  
रूमरँ

कठिन ल' जागत खडि जे चोबी रा तस्की  
कत' नहि खडि ? खजूक संगीतकाव पडिबुका जमाना  
केव गीत-संगीतसँ 'प्रेवणा' नेत छथि । तहियोका  
संगीतकाव पवनका संगीतकेँ नर शीवीवमे गरँरै छनाह ।  
हनकव मलक 'प्रेवणा' छननि कीर्तन आ नोक-संगीत ।  
आ कीर्तनिण नोकनि केँ कथी नेन हिचकिचाहठि हेतनि  
अपनहूँ सँ प्राचीन शीम्वीय संगीत सँ कनी-मनी नकन  
उतावरामे ? (थसँत मलक 'मूड केँ रूमरँक प्रयास  
करैत) सह रँत मनीमा मे थियेठव मे ... कथा,  
करिता मे सेहो.... !

राजाबी : तौँ कहत छह खजूक मलठा नेखक  
कलुका साहिलकावक नकन करैत खडि, आ कलुका नोक  
पवस्वका करि नेखकक वचनसँ चोबी करै छन... ?

खनुचव 1 : माने चोबि पव  
चोबि... ?

खनुचव 2 : आ चोबिये पव ठिकन खडि दुनियाँ  
?

राजाबी : हे... ङा त' खरुव क' देनह हो... !

चोब : खरुव किये हेत ? कोनो दू ठाँ पाँति न'  
निय' ने-

‘मेघक रँवखा....

राजाबी : ङा त' वरीन्द्रनाथ ठाँरुवक करिता भेन,  
नेना-नुठका मल



## नेन निखन...

- भद्र राज्ञि 1 : (असंतुष्टं स्वयमे) एहिमे चोवी केव कोन रात  
नेन ?
- राजावी : ओ ककव नकन उतावि बहन छनाह ?
- भद्र राज्ञि 2 : हुनका मन महान करिकेँ चोव कहे छी ?
- चोव : (जेना हिनका सभक रात सुनतहि नहि छथि-हाथसँ  
सभठाँ रात केँ नारैत...) रिद्यापतियेक पाँति निय—  
“माधर रँहूत मिनती कवी तोय !”
- उचक्का : एकवा नखे तँ सभ का चोव...
- पाँकिठ-याव : (हँसैत) आ सरँठा दुनियाँ खछि भवन हुँसिसँ...सरँठा  
महामाया...
- राजावी : हे एकव रातमे नहि खाँड ! (अब्रचव द्रयसँ) अहाँसभ  
कोन नर रात कहे दय छनहँ...सह कहू ।
- चोव : (उँच स्वयमे) कोना कहताह ओ नर रात ?  
रिद्यापतिक एहि एक पाँतिमे कोन एहन शिद्ध छन जे ने  
अहाँ जाले छी आ ने हम ? ‘माधर’... ‘रँहूत’... रा  
‘मिनती’... अथरा एहन कोन राक्य ओ राँजेत छनाह जे  
हुनकासँ पहिनहि का नहि राँजि देने छन ? आ  
शितेको एहन करि नेन हेताह जे मेघक रँविसरँ दय  
रँजने हेताह आ एहन सभठाँ शिद्धसँ गठाने हेताह अपन  
करिता केँ ?



मानुषीमिह संस्कृतम्

(सभ का एहि तर्क पब कनेक छप भ क सोच  
नेन राँधा भ जागत छथि । )

खनुचव 1 : माने... ?

चोब : माने ङा जे दुनियाँ मे एहन कोनो राक्य नथि भ'  
सकैछ जकब एकठाँ रँडक्का ठाँ खँशि खान का कखनहू  
कतहू कोनो ने कोनो उद्धथसँ रा मजरूबीसँ राजि नथि  
देने होथि ! भ' सकैछ खहाँ तीन राजिक तीनठाँ  
राँतक ढूँकड्णी- ढूँकड्णी जोड्णी कय किछ राजि  
बहन होगक ! एहिमे नर कोन राँत भ' सकैछ ?

राँजाबी : हम सदिखन नर राँत कहँरा नेन थोड्णी  
राँजे छी ? हम त' मोनक कोनो ने कोनो भारनाकेँ  
रँस उँगड्णी दैत छी... ।

चोब : खा तैँ खाग धवि जे किछ  
रँजनहूँ से सभठाँ राँजाबमे... माने एहि पृथ्वीक कोनो ने  
कोनो राँजाबमे का ने का खथरा कैक गोठेँ पहिनहूँ  
रँजने छन ?

खनुचव 1 : तखन खहाँ कह' चाहि छी जे....

चोब : (पुनः राँतकेँ काँठैत) ने  
खहाँ किछ नर राँत कहि सकै छी खा ने खहाँ केब  
नेता... ।



(तारत नेपथ्यामे शोब होगत छैक ..”नेताजी  
थयनाह”, “हे रैह छथि नेताजी” कतय, कतय यौ !  
हे देखे नथि छी ? खादि सुनरामे थरैत  
थछि । का नावा देम नागेत थछि---‘नेताजी  
जिन्दारौद’ देशीक नेता रँदवी रौरू जिन्दारौद, जिन्दारौद  
! खादि सुनन जागछ । मंचपव रैसन सरँ गोठामे  
जेना खनरँनी मचि गेन होगक । मभ उँठि कय ठाठः  
भ जागत छथि । का-का थनका मभक पवराहि कयने  
रिन्न थगुथा एँरौक प्रयास करैत छथि ।

तारत गव मे एकठा गेँदाक माना  
पहिवने था कपाव पव एकठा ननका तिनक नगौने रुता  
- पैजामामे मभकेँ नमस्काव करैत नेताजी मंच पव  
थरैत छथि...पाछू- पाछू पाँच-सात गोठेँ थाव थरैत  
छथि था सरँ मिनि कए एकठा थकावण लीडःरु कावण रँनि  
जागत छथि । “नमस्काव ! नमस्काव ! जय मिथिना...  
जय जानकी माता..कहत ओ मंच पव उँपस्थित होगत  
छथि था रँगनहिमे माङ्क पव चोवकेँ परैत छथि ।

धीरे-धीरे सरँ का थपन-  
थपन थामन पव रैसि जागत छथि, थन्नचव दूनु कोना की  
कवताह नेताजीक नेन से रँनि नहि परैत छथि, कखनहु  
नोककेँ शीत करैत छथि त कखनहु “नेताजी  
जिन्दारौद” ! कहि छथि त हेरो कखनहु हुनक पाछू-  
पाछू थारि कए रुसी खादि सविथारँ नगेत छथि ।  
थतिविङ्ग नोक मभ तारत रौहव चनि जागत छथि । )



(क्रमशः)

\*\*\*\*\*

२.शोध लेख

मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (खाँगा)

प्रथमं शीन पत्री च/ मंत्रपत्र/ /प्रबोहित/ खाँ म्त्री-धन केव संदर्भमे

श्री मायानन्द मिश्रक जन्म सहवसा जिनाक रँनेनिया गाममे 17 अगस्त 1934 अ.केँ भेनहि । मैथिनीमे एम.ए. कएनाक रौद किछु दिन अा काशिरानी पठनाक चौपान सँ संरक्ष बहनाह । तकवा रौद सहवसा काँनेजमे मैथिनीक र्याख्याता खाँ रिभागाध्यापक बहनाह । पहिले मायानन्द जी करिता निखनहि,पछाति जा कय हिनक प्रतिभा खानोचनामेक निरंध, उपन्यास खाँ कथामे सेहो अकठ भेनहि । भाई नोठा, खाँगि मोम खाँ पाखव खाँव चन्द्र-रिन्दु- हिनकव कथा संग्रह सभ छुहि । रिहाई पात पाखव , मंत्र-पत्र ,खोता खाँ चिठे खाँ सूर्यास्त हिनकव उपन्यास सभ अछि ॥ दिशीतव हिनकव करिता संग्रह अछि । एकव अतिविज सोने की लेया माठी के नोग, प्रथमं शीन पत्री च,मंत्रपत्र, प्रबोहित खाँ म्त्री-धन हिनकव हिन्दीक प्रति अछि । मंत्रपत्र हिन्दी खाँ मैथिनी दू भाषामे प्रकाशित भेन खाँ एकव मैथिनी संस्करणक हेतु हिनका साहित अकादमी प्रबन्धकसँ सम्मानित कएन गेनहि । श्री मायानन्द मिश्र प्ररौध सम्मानसँ सेहो प्रबन्ध छुथि । पहिले मायानन्द जी कोमन पदारनीक बचना करैत छनाह , पाछाँ जा कय प्रयोगरादी करिता सभ सेहो बचनहि ।

मायानन्द मिश्र जीक गतिहास रौध

प्रथमं शीन पत्री च/ मंत्रपत्र/ /प्रबोहित/ खाँ म्त्री-धन केव संदर्भमे





द्वितीय मन्डनमे बाजाक समिति द्वारा एहि गपक नेन पदच्युत कएन जएरौक चर्चा खँछि, कि धेनुक चोबिक रौदो गरा-हफ ७२ नहि कएनहि । खँभिषेकक सङ्ग बाजा सेहो प्रायः निश्चित होमए नगनाह खाँ कौनिक पवम्पवा चनि गेन । पहिने समितिक निर्णयक रौदे कया समर्थन-याचनामे जागत छुनाह, बाजदन्ड सम्वारेत छुनाह । धेनुक हवण कएने छन खनास दस्यु सभ । सुरासु, फुद्द, रितसुता खाँ खँखनीक तँ पव श्रुति खँत्तास खाँ हफ-कार्य संगहि चनेत छन, एके संग ब्रौह्मण, ऋत्रिय खाँ रैशु कर्म करैत छथि, ऋदा सबस्यतीक तँ पव रौत किछु दोसरे भँ गेन, ऋषिग्राम हवाक होमय नागन । सभँठा खनास दस्यु दास रँनि गेन खाँ दासीसँ आर्यगणक संतान उपेन्न होमय नगनहि । दासीपुत्र नोकनिकेँ तँ गाममे घब रँनेरौक खँन्मति चनहि ऋदा खनास दस्युकेँ ७२ खँन्मति नहि छनहि । एहि गपक चर्चा खँछि, जे आर्य चर्म रम्ब्र पहिरेत छुनाह खाँ खनास दस्यु ओकनिक संपर्कसँ सूतक रम्ब्र खाँ नरणक प्रयोग सिखनहि । एहि दूनू चीजक आपूर्ति एखनो खनास नोकनिक हाथमे छनहि । खनार्य नोकनिक संपर्कसँ अपन शिछ कौशि रिसवरौक खाँ तकव संकननक आरथकताक पूर्तिक हेतु निघँठूक संकननक चर्चा सेहो खँछि । गंधर् रिराहक सेहो चर्चा खँछि ।

तृतीय मन्डन



अग्निष्ट्याम यज्ञक चर्चा अस्ति । द्वागव आ२ महीसक रँनि केव चर्च अस्ति ।

माँस-भात महर्षि लोकनिकेँ प्रिय नगनहि, तकव चर्चा अस्ति, ऋदा भातक रँदना गद्धमक सोहावीक प्रचनन एखनो रेशी होएरौक चर्चा अस्ति ।

### चतुर्थ मन्दन

बाजाक अतिषेक यज्ञक चर्चा आ२ ओहिमे अविष्टनेमिक ब्रँहा रँनरौक चर्चा अस्ति । ग्रामणी, बथकाव, कम्मवि, सूत, सेनानी सेहो यज्ञमे सम्मिनित हुनाह ।

’अति प्राचीन कानमे सृष्टि जनमय हुन ! ’ एकव चर्चा मायानन्द मिश्रजी नहि जानि ऋगरेदिक ह्यगमे कोन कए देनहि ।

### पञ्चम मन्दन

अश्वारोहन प्रतियोगिताक चर्चा अस्ति । अनास दाम-बंजक नाष्टरृत्तिक चर्चा सेहो अस्ति । बाजा द्वावा एकव अतिषेक कार्यक्रममे स्त्रीप्रति आ२ एकव भेन रिरोधक सेहो चर्चा अस्ति । दामकेँ स्वतंत्र प्रषि अधिकार आ२ एकवा हेतु रिदथक अन्वमति बाजा द्वावा नेन जाए आकि नहि तकव चर्चा अस्ति ।



## षष्ठ मन्दन

महारेवाजी यत्रक चर्चा ख्छि । समस्त दस्यु ग्रामक दाम रनि जएरौक सेहो चर्चा ख्छि, खा२ ओ२ सल पशुपानन खा२ पशि कार्य क२ सकैत छथि । नग्नजितक प्रसंग नए मंत्र गायन केनिहाव ब्रौह्मण, गरिष्ठी ह्यङ्ग कएनिहाव ऋत्रिय खा२ एह्र खतिबिकतु जे धरिष रिकाममे रेशी ध्यान दैत छानाह से रशि- सामान्य जन छनाह ऋदा एहिमे मायानन्द जी रेशु शिछ सेहो जोडि देने छथि ।

## सप्तम मन्दन

ररिब उजवा आर्यक आक्रमणक चर्चा खरि जा२ कए भेन ख्छि । प्रायः रिदेशी रिशेषत्रक संग मायानन्द जी सेहो पेशीची आक्रमणकेँ रौदमे जा२ कए रूनि सकनाह खा२ एकवा सेहो आर्यक दोसब भाग रना देनहि । आर्य हबियुपियाकेँ डाहि कए नष्ट कए देने छनाह एकब हेब चर्च खरि गेन ख्छि । मोहनजोदड १ आतंकसँ उजडि गेन, हेब भूकम्पा आयन ताह्रसँ नगब ध्वस्त भेन । खरि मायानन्दजी ओनड यन रूमागत छथि । ररि कम होएरौक सेहो चर्चा ख्छि ।

## अष्टम मन्दन



मानुषीमिह संस्कृतम्

शुषिग्रामक चर्चा अस्ति । हनमे दाम आह दामी होएरौक संकेत अस्ति । वृषभ पाननक सेहो संकेत अस्ति । मंत्र-पुत्रक ग्रामांचन चनि जएरौक आह रिशिः-रैथ रनि जएरौक सेहो चर्चा अस्ति । म्हादा आगाँ मायानन्दजी ओमवागत जागत छथि । कशुप मागव तठमँ प्रस्थान-पूर दाम आह ब्रवाष्ट्री केव गौण देर भह जएरौक चर्चा अस्ति । ब्रौह्मण आह ऋत्रियक रिभाजन नहि होएरौक चर्चा अस्ति आह का कोनो कर्म कवरौक हेतु स्रतंत्र छन । देरासुव संग्राम आह हेनमन्द तठक ह्यह आह पशुपाननक चर्चा अस्ति । पश्चात ब्रौह्मण आह ऋत्रियक कर्मक हवाक होयरँ प्राबन्धु भए गेन । पश्चात् मंत्र-द्रष्टा शुषि द्वावा मंत्रमे देरक आह अपन नाम बखरौक प्राबन्धु भेन- एकव चर्चा अस्ति । श्रुति अन्तासक प्राबन्धु होएरौक चर्चा अस्ति कावण मंत्रक संख्या रँढाँ गेन छन ।

नरम् मन्दन

रसु रिनमयक हेतु हाँ रारसुहाक प्राबन्धु भेन । हाँमे मृत्तिका प्रभागमे दाम-शिंपीक पात्रक उपस्थिति आह रसु प्रभागक चर्चा अस्ति । मृत्तिका, हसु-दन्त, ताम्र सीपी आदिक रनन रसुजातक चर्चा अस्ति । शिषु-वंजनक रसु जात- जेना हसु, वृषभ आदिक मृत्तिक, नरणक, अन्नक, काष्ठक आह कसुनक रिधीक चर्चा अस्ति ।

दशम् मन्दन

ह्येत-जनक आगमनक -रँरँव ह्येत आर्य- सूचना नागजनकेँ भेँरौक चर्चा अस्ति । नाग जन द्वावा अपन दनपतिकेँ बाजा कहन जायरँ, नागक पूर-कानमे ससवि कए यम्हा तठ दिशि आयरँ आह ओतुका नोककेँ ठेन कए पाछाँ कए देरौक सेहो चर्चा



मानुषीमिह संस्कृतम्

अच्छि । प्रच्छ जनक काष्ठ दूआ आह नागक संग हूनका नोकनिकेँ  
सेहो अनास कहन गेन अच्छि । अदा अण नोकनि दीर्घकाय हुनाह  
आह नागजन कनेक छोट । एहि मन्दनमे दासक संग शूद्रक आह  
गंगा तटक सेहो चर्चा आरि गेन अच्छि । आर्य, दास आह शूद्रक  
रीचमे सहयोगक संकेत अच्छि ।

अतमे अचानोक नामसँ भूमिका निखन गेन अच्छि । देरासुव  
संग्रामक रौद अन्द असुव उपाधि बागनहि, हित्ती मित्तानी चनन,  
आह आर्य पूर दिशा दिशि रूढन आदिक आधाव पव निखन अ  
मंत्रपत्र एतिहासिकताक सभटा मानदल नहि अपनाह सकन ।

(अनुरतते)

३. उपन्यास



महश्रौतनि - गजेन्द्र ठाकुर



आरि ओह छोट । कानय अजय नागन, आह पैघ रअक कोनो  
रुदमशि रिद्यार्थिकेँ रौजारैह हेतु गेन । हेव घुबि कए जे आयन



मानुषीमिह संस्कृतम्

तँ ओकव कानरँ-खीजरँ रँन भए गेन छुनैक, हमवा कहनक जे हमव भाग्य नीक खँछि जे जकवा ओ२ रँजारँए गेन छन से खाग स्कून नहि खाएन खँछि ।

दू तीन दिन धवि हम ग्रा ग्वन-धून करैत बहनहूँ जे ओ२ ओहि रँदमाशिकेँ रँजा२ कए नहि खानि नए । ओहिना किछु दिनुका रँद ओकवा हेब कोनो दोसब छौड़ सँ नगइ । भेनैक खा२ ओहि दिन ओ२ हीरो छौड़ । स्कून खाएन छन । हमरे सोनाँमे ओ२ हमव कम्फामे खाएन खा२ एक फेँट पेँठमे दोसब रिद्यार्थीकेँ मावनकैक । का रँचरँए नेन तँ नहि गेनैक झुदा रँदमे जखन एकठाँ बनासमे शिक्कक नहि खँएनाह खा२ रिद्यार्थी सब खानी गप शिप कए बहन छन तखन एहि रँतक निर्णय भेन जे खारँ ओहि रिद्यार्थीसँ का गप नहि कबत खा२ बनास ठीचबसँ एहि गपक शिकागत कएन जायय जाहिसँ ओ२ ओहि रँदमाशि रिद्यार्थीक बनास ठीचबकेँ एहि घँठनाक रिषयमे रँतारँथि । खारँ ओ२ पिनकाह रिद्यार्थी शुक-पाक कबए नागन । हेब ओहि रिद्यार्थीक नग गेन ओकवा कान भइँ कए खाएन जे सब ओकवा रिक्कमे चानि चनि बहन खँछि । ओ२ रँदमाशि खारँ कए सबकेँ उँठरँक नेन कहनक, झुदा का नहि उँठन । तख्न ओ२ हमवा कहनक जे उँठू । हम उँठि गेनहूँ खा२ तखन ओहिना एक-एक क२ कए तीन चाबि गोते केँ उँठेनक खा२ हेब सबकेँ उँठरँक नेन कहनक । सब उँठि गेन । तखन सबकेँ धमकी देमय नागन । झुदा एहि रँव हमव सबक बनास मोनीठव किछु हिस्मतसँ काज नेनक खा२ ओकवा ओहि छौड़ क रिषयमे कहए नागन । हमवा देखाय कए कहनक जे एकवा देखेत छी ? कनियो रँदमाशि नगेत खँछि, एकरो खहाँक नाम न२ कए दरँइँ बहन छन । ओ२ छौड़ । तँ हूँ छन से





ओकव पावा चढा गेनेक खां हमव रञ्जक पिनकाहा छेड़ ाकेँ  
चेतौनी देनकेक जे खाग दिनसँ कनेत थिजेत ओकवा नग नहि  
खाओत खां ओकव नाम नह कए ककरोसँ नगड़ ा नहि कवत ।

एहिना स्कून चनि बहन छन खाकि एक दिन एकठा छेड़ ा रञ्जमे  
पिहकी मावि देनकेक । ओं छेड़ ा रीचहिमे रँझुं ग भागि गेन  
छन रौन कनाकाव रँनि कए । घुबि कए खायन तँ रञ्ज शिम्कक  
पुछनहि जे किएक घुबि खएनहँ तँ कहनकहि जे सभ कहनक  
जे एतय तँ सभ री.ए., एम.ए. खडि, खहाँ कमसँ कम  
मैट्रिको कए निखह । खरँ पिहकीक रौद रञ्ज शिम्कक पढ ाग  
छेड़ि कए ओकव खल्लषामे नागि गेन । पिहकी कौन दिशिँ  
खायन । रँहमतक खाधाव पव एक कातकेँ छौँटि देन गेन ।  
खरँ खगुँसँ खायन खाकि पाछुँसँ । ताहि खाधाव पव सेहो एकठा  
रौच निधविषा भए गेन । ओहि रौच पव छह गौँठे छनाह । खरँ  
ग निधविषा होमए नागन जे रौम कातसँ खायन खाकि दहिनसँ ।  
खेव छहमे सँ दू गौँठेक निधविषा रँहमतक खाधाव पव कएन  
गेन । ओहिमेसँ एकठा हमवा नोकनिक रँझुं गया हीरो छनाह,  
जनिकव रँझुं गक थिम्सा ठिपिनसँ नह कए नीजव बनास धवि चनेत  
बैत छन । झुदा एहि दू गौँठेमे १:१ केव ठाँग भए गेन  
कावषा का मानए हेतु तैयाव नहि जे पिहकी के मावनहि ।

एकव रौद डायवी खानी छन । नन्द रौँठेकेँ रँजा कए डायवी दए  
देनहि खां मात्र ग कहनहि जे पढ ाग पव ध्यान दिख । एहि  
रौत पव नज्जित होएरौक कौनो रौत नहि छन झुदा खाकषिकेँ  
हनकव भाए रँहिन एहि गपक नेन रँहूत दिन धवि किचकिचारैत





बहनाह । खसु एक दिन ७२ डायवीकेँ हाडि देनहि, खाइ ङ  
खामेकखामेक उपन्यास पूर्ण होएरौसँ पहिनहि खतम भए गेन ।

(खनुरतते)

४. महाकार्य

महाभावत -गजेन्द्र ठाकुर(खाँगा)

-----

३. रन पर

पारि हथिप्रिबक खात्रो चननाह खर्जून,  
परत केनास पब पाव कए कइ गंधमदन ।  
तूणीव खाइ धनुष हुनकब संगमे छन,  
साधु जठाधावी तपस्त्री खर्जूनसँ प्छन ।  
ङ छी तपोभूमि शिखक काज नहि कोनो,  
खर्जून कहन हम स्फात्र धर्म कहाँ छोड़न ।  
तारत शिख सेहो ताहि द्वारे बाखन खड्डि,  
प्रसन्न भए गनद खपन खसन कप धवन ।  
माँगू रसे रब हमवासँ प्रसन्ना छी हम,  
शिक्षाक संग दिर्यास्त्र भेठय एहि स्फण ।



अर्जुन अहाँक ज्ञा नानसा पूर्ण होयत झुदा,  
जाडु शिरकेँ प्रसन्न कए पाशुपत पाडु ।  
हेब देरगण देताह दिर्याम्त्र अहाँकेँ,  
ज्ञा शिम्त्र सभ मानर पब चनायर अछि रजित,  
कहु अहाँ पारि कबर की दिर्याम्त्र सभ ज्ञा ।  
शक्ति-संचय अछि हमब उद्धृष्ट मात्र देर,  
कौबर छीनन अछि बाज्य छनसँ पबख,  
नहि कबर एकब कोनो ऋप्रयोग नहि हम ।  
गन्दक अलुधनि भेनाक उतुव अर्जुनक,  
शिर तपस्या कठोब छन होमय नागन ।  
तखन पारती संग शिर चननाह तपोभूमि,  
अर्जुन पृष्प रीछि बहन छनाह अरौत ऋण,  
रावाह रनसँ निकनि कए समुख आएन ।  
जखनहिँ तूणीव धनुष बाधि संधान कएनक,  
किवात रवाहकेँ नम्र्य कएने दृष्टि आएन ।  
दनु गौठे चनाउन राण रावाह माबन,  
एहि राँत पब दुहु गौठे नगड । रँजाबन ।



खर्जूनक गप पव जखन ठठागत किवात,  
खर्जून ओकवा पव तखन राण चनाउन,  
पवथर देखि नहि घर कोनो प्रकारक,  
खर्जून किवात पव छन तनराव भाँजन ।  
झदा किवातक देहसँ ठकावागत देवी,  
भेन खर्जूनक खडक धुँकड़ ी छरैत देवी ।  
मन्न ह्यङ्ग शुक भेन भेन अचेत खर्जून,  
उठन जखन शुक कएन पूजन हनदेरक ओः,  
पुष्प पहिवाए शिरकेँ उठन गव छन ओ२ माना,  
किवातक गवदनि मध्य, देखि साग्रंग कएन तहिखन ।  
किवात रेशिधावी शिर कहन रव माँग खर्जून,  
पाशुपत अस्त्र माँगन छोट्टरँ रोकरँ सीखन पुनि ।  
शिर कहन रूमू झदा ङ तथ्य अङ्घि जे,  
मनुष्यक डुपव एकव प्रयोग कखनहुँ कवरँ नथि ।

तखन खर्जून निकनि गेन गन्दनोक दिशामे,  
पारिँ दिर्य अस्त्रक शिक्षा मावन अस्वव ओहिसँ ।



एक दिनक गप उरशी खायनि करैत याचना प्रेमक,  
खर्जून कहन खहाँ तँ छी खप्सवा ग्वक गन्दक ।  
माता तुन्य भेनहँ ओहि संरधसँ खहाँ हमब,  
खायन छी हम एतय शिक्षा प्राप्तिक नैन शिम्बक,  
तपस्या नृसक खाँ संगीतक कबए भोग नहि,  
ताहि दृष्टिये खहाँ भेनहँ हमब माता ग्वक दुन ।

उरशी तखन देनक ओकवा शोप ग्रा ठा,  
कामिनीक खहाँ शोप स्वनू निर्यीर्य बहरँ खहाँ,  
रर्य भवि झुदा किएक तँ कहन माता,  
शोप ग्रा पुनि रँनत रबदान नृकि सकरँ खहाँ ।

पाल्दर जन सेहो पारि बहन ऋषि झुनिसँ शिक्षा,  
समाचाव देनहि नाबद खर्जूनक कहन खाएत,  
नोमशी ऋषि खारि समाचाव खर्जूनक स्वनाएत ।  
किछु दिनमे नोमशी ऋषि खएनाह ओतए,  
कहन प्राप्त कए पाशुपत शिरसँ कैनासमे,



खर्जून देरनोकमे प्राप्तु दिर्याशेस्त्र कएन,  
नृन् संगीतक शिक्षा खल्सवा गंधर्गणसँ  
नए बहन शिक्षा खर्जून देरनोकमे सनजमसँ ।

तखन ऋषि तीर्थाष्टिन कवाडुं हमवा नोकनिके,  
नोमशी तखन गेनाह नैमिषावण्ट पाल्दर संग ।  
प्रयाग गया गंगासागव पुनि ठपि कनिंग पहुँचन,  
पङ्क्तिम दिशि प्रभासतीर्थ यादरगण जतए छन ।  
स्नागत भेन ओतए स्वभद्रा मिननि द्रौपदीसँ,  
रैनवाम छञ्जक साँहना पारि रँढन खागाँ,  
सबस्वती पाव कए कश्मीव खाँ गंधमादन परत,  
पाव कए छढन परत एक रर्या खाँ शिनापतन रिच ।  
पहुँचि गेनाह रँदविकाश्रिम रिश्राम कएन ठहवि ।  
ओतहि दुःशना पति जयद्रथ काम्यक रनसँ,  
छन जाँ बहन देखन द्रौपदीकेँ खसगव ओतए,  
पाल्दरगण गेन छन शिकावक नेन तखन ।  
रैसन ऋष्टीमे रिराह प्रस्तार देन द्रौपदीकेँ,



नीचता देखि द्रौपदी कठोव रचन जखन कहन,  
बथमे नए भागन अपहवण कए दुष्ट, जयद्रथ ।  
आश्रिम आरि पारि समाचाव भीम ओकवा पब छुठन,  
तखनहि अर्जुन सेहो आएन पाछु जयद्रथक गेन,  
हथिप्रिब कहन आशदान देरि पति दुः शिनाक छी ओ२,  
जयद्रथ देखन अरैत दनु भाएकेँ द्रौपदीकेँ छोड़ि भागन,  
भीम पठकि राहनि खानन ओकवा द्रौपदीक सोमाँ,  
द्रौपदी अपमानित कए छोड़रौउन ओकवा ।  
शिरक तपस्या कएन जयद्रथ रवदान माँगन,  
जितरौक पाँचु पाल्दरसँ कहन शिर ङा,  
नहि हावरँ अहाँ कोनो भाएसँ अर्जुनकेँ छोड़ि ।  
कर्ण छन तपस्या कए बहन अर्जुनकँ हवएरौने,  
गन्द्र सोचन शीबीबक करच फलन अछैत ओ२,  
हावत नहि ककबहूसँ दानरीब पवाफमी ओ२ छन ।  
सोचि ओकवासँ हम माँगरँ करच फलन,  
देखि ङा सूर्य कएनहि होङु सचेत अर्जुन,



आरिं बहन गन्द छद्म रेषमे याचना कवत ङ,  
करच फ्लडन छोडि किछु माँगत नहि ओ२ ।  
कहन कर्ण याचकरै हम नहि नधि कहरँ प्रण,  
प्रण हमब नहि धूँठत चाहे जे पविणाम होमए ।  
तखनहि रिप्र रेषमे गन्द आरि दूह रसु माँगन,  
ठोढ पब मर्मक झुझी कर्णक हाथ शिख्र आयन,  
काँठि देहसँ करच फ्लडन समर्पित कएन तखनहि,  
गन्द देन रब माँगू छोडि ङ रज्र हमब थाब किछुओ,  
अमोघ शक्ति माँगन कर्ण गन्द देनहि कहि कए,  
मावत जकवा पब चनत पुनि घूबत नग हमब आयत ।

शनेः -शनेः छन रीति बहन रौबह ररष एहिना,  
एक ररषक अत्रोतरामक रिषयमे रिचावि बहन,  
रिचावि हधिप्रिब बहन भाय आ२ द्रौपदीक संग,  
तखने कनेत थिजेत एकठा रिप्र आएन,  
कहन अवाणीक नहड़ ी छन फुठीक रौहब ठाँगन,



हविषा एक आरिं हवयार्य नागन ओहिसँ,  
जाए कान सिंहमे ओमवायन अविणी ओकव,  
रिस्मित भागन ओ२ नए हमव नहड़ ी,  
कोना कए होमक अग्नि आनरँ चिन्तित छी ।  
रिप्रक संग पाँचो भाँय हविषाकेँ खेहावन,  
ह्रदा छन ओ२ चपन भए गेन ओमन ।  
रबक गाछक नीचाँ ओ२ सभ नञ्जित पियासन,  
ठैहिआयन रैसन नहन गेन सरोरव पानि आनए ।  
एकठाँ धुनि आएन आ चभचा हमव छी,  
उतुव हमव प्रमक रिनु देने पानि नएँ भेटत आ ।  
नहि कान देन ओहि गप पव हकासन पियासन,  
पानि जखने पिअन अहड़ १ कए मृत ओ२ खसन ।  
सहदेरक संग सेहो एहने घटना घटन छन,  
अर्जुन जखन आएन हएव रैह धुनि सुनन,  
शेछभेदी राँष छोड़न ह्रदा नहि कोनो प्रतिहन,  
पानि पीरैत देवी ओहो मृत भए खसन छन ।





हधिष्ठिव भए चिन्तित भीमकेँ पठाउन ताकए,  
पानि पीरि मृत भए नहि घुबन ओतए ।  
हधिष्ठिव जखन रन रीच सरोरव पहुँचन,  
मृत भाए सभकेँ देखि र्याहन पानिमे उतबन ।  
रैह धुनि खाएन उतुवक रिना प्यासन बहरँ,  
होएत एहि तबहक पविणाम जेँ धृष्टता कबरँ ।  
अ खडि कोनो यम्क सोचि हधिष्ठिव रौजन,  
पुछु प्रश्न उतुव सम्यक देरँ शुक भेन यम्क ।

मनुष्यक संग के खडि दैत ? प्रथमतः अ रौजू,  
धैर्य ठा दैछु संग मनुष्यक सदिखन सोकाजू ।  
यशेनाभक खडि कोन उपाय एकठा ?  
दान रिनु यशे नहि भेटैछ कोनोठा ।  
राहसँ ह्रवित खडि कोन रसु ?  
मनक खागाँ राहक गति नहि कतहू ।  
प्ररासीक संगी खडि के एकेठा ?  
रिद्याक गतव नहि संगी एकोठा ।



ककवा लजि कए मनुक्थकेँ भेठैछु ऋकित्तु ?

अहं छोड़न तखन भेठैत रिऋकित्तु ।

कौन रसुक हवाएनासँ नहि होगछु मन दुःखित ?

आधक हवाएनासँ किए होयय का शौकित ।

कौन रसुक चोबिसँ होगछु मनुक्थ धनिक ?

नोभक ऋति रँनरैछु पृथु सरँहि ।

ब्रौह्मण जन्म, रिद्या, शीन कौन गप पव अरनश्चित ?

शीन स्रभार रिनु ब्रौह्मण बहत नहि किछु ।

धर्मसँ रँढि अछि की जगतमे ?

उदार मनसि उँच पदसु सभसँ ।

कौन मित्र नहि होगत अछि प्रवान ?

सज्जनसँ कएन गेन मित्राताक कौना अरसान ।

सभसँ पैघ अद्धुत की अछि एहि जगमे ?

मूनु सभ दिनु देखनहु अछैतो जीरन नानसा,

एहिसँ रँढि अद्धुत आश्चर्य अछि की ?

असन्नचित्तु भए यक्क कहन हाधिष्ठिव कछु,



कोनो एक भाएकेँ हम जीरित कए सकरँ ।  
तखन नहनकेँ कए दिख जीरित,  
सुनि यम्क पूछन कहरँ तँ भीम खर्जून कोनोकेँ,  
जीरित कवरँ जकब वण कौशिन कवत बम्का ।  
धर्मबाज कहन धर्मक रिना नहि होगछ बम्का,  
हन्ती पुत्र हम हधिष्ठिव जिरैत छी,  
माद्री मातुक पुत्र जिरैथू नहन सह उँचित ।  
सुनि कहन हिवण रेशिधावी यमबाज हे पुत्र,  
पम्कपात बहित छी खहाँ तै सभ भाए जीरैथू ।  
पुत्रकेँ देखि मोन त्रुपु भेनहि यमक,  
पाल्दर गण तखन घुबि द्रौपदीक नग गेनाह ।

४. रिवाँठ पर्

(खन्नरतते)

३. कथा

१०. हूसि-हठक



मानुषीमिह संस्कृतम्

“कौनो काज भेना पब हमवासँ कहँ । कनकठबक ओहिठाम भोव-साँन रैसावी होगत खँछि हमब । घंठाक-घंठा रैसन बहत छी, खारँए नगेत छी तँ बोकि कए खेब रैसा नेत खँछि, दोसब-दोसब गप शुक कए दैत खँछि” ।

“ठीक छैक भाग जी । कौनो जकबी पड़त तँ कहँ । नाम की छन्हि हुनकब” ।

“रँडु नमगब नाम छन्हि, भा.प्र.से. प्रशांत । खारँ भा.प्र.से. केब पूर्ण कप हुनकामँ के पद्धतहि से प्रशांते कहत छन्हि” ।

“भावतीय प्रशासनिक सेराक संक्षिप्त कप छैक भा.प्र.से., ङा हुनकब नामक खंग नहि छन्हि” ।

“खँछा तँ खेब सह होय । ताहि द्वारे नेम-प्लष्ट पब नामक नीचाँ निखन बहत छैक” ।

“ठीक छैक भाग जी । कौनो जकबी पड़त तँ खहाँकेँ कहँ” ।

मीत भागक गप पब भास्वब राजन । ओना भास्वबक खन्नुभर येह छैक जे जखन कौनो काज करोसँ पड़त छैक तँ येह उतब भेटैत छैक-

“पबकाँ मान किएक नहि कहनहुँ, ककब-ककब काज नहि कबएनहुँ । झुदा एहि रैब तँ कौनो जोगारे नहि खँछि । कहियो कौनो काज नहि कहने छनहुँ खँ खँग कहनहुँ तँ हमवासँ नहि भँ पारिँ बहन खँछि, से जानि कचोष्ट भँ बहन



मानुषीमिह संस्कृतम्

थछि” । थह जखन ओ२ रँहवागत छथि, तखन ङा रँजन जागत थछि-

“हननाक रँन-रँचा मभ रँड ठैठः। कहियो घुबि कए नहि थायन छन भैँठ कबए । थह थग काज पडन छैक तखन थायन थछि” ।

भास्करक रँरँजीक संगी एक दिन रामेनासँ एक रँब कोनो रँझानी रँरँकेँ हिनका सौँना एक गोठ रँड नीक गप कहने छनाह-

“देखू दादा । ङा छथि भास्कर । हमब थवंत प्रिय मित्र सलार्थीक रँैठा” ।

“हनकब रँैठा तँ रँड छोठ छन” ।

“येह छथि । थहाँ रँड दिन पहिने देखने छनियन्हि तखन छोठ छनाह, थरँ पैघ भए गेन छथि । कहैत छनहँ जे हिनकब पिता हिनका नेन किछ नहि छोडि गेनाह । झदा हमब पितक मूँ १९७० ङा. मे भेन छन थह हमबा नेन ओ२ नगबमे १२ कण्ठा जमीन, एकठा घब थह एकठा स्रुठब ओहि जमानामे छोडि गेन छनाह । थह जौँ ङा रँचा ककरो नग कोनो कजक हेतु जायत, तँ एकबा उतब भैँठैक जे पबकाँ किएक लेँ थएनहँ थह परोछमे कहतन्हि, जे काज पडनन्हि तखन थायन छथि ।

झदा एकबा समझा पडनैक तखन थहाँकेँ पृछरँक चाही छन, झदा से तँ थहाँ नहि कएनहँ । थह थहाँक नग थायन थछि, तखन थहाँ उल्लाँ गप करैत छी । थह जौँ ङा रँचा सहायताक नेन नहि जायत थह थपन काज स्रयं कए नेत थह ओहि श्रीमानकेँ से रँूमरँामे थरँि जएतन्हि तँ उपकबि कए थओताह थह पृछथिन्ह



मानुषीमिह संस्कृतम्

जे काज भ॒ह गेन॑ खाकि॒ नहि॑ । कह॒नहूँ॑ नहि॒ । खा॒ह त॒खन॑ ङ  
रँ॒चा कह॑त जे काज भ॒ह गेन॑, ह॒गरान॑क द॒या ब॒हन॑ । से दादा  
क्या॑ कोनो काजक नेन॒ खाँ॒एँ तँ॑ रूँ॒नु जे॑ ह॒मोन॑सँ खा॒ह स॒मस्या  
भेने॑ उँ॒तव॑ खा॒यन॑ ख॒ष्टि॒ खा॒ह ते॑ ओ॒कव॑ स॒हाय॑ता क॒क” ।

ख॒सु मी॑त भा॒गक॑ क॒था खा॒गू रँ॒ट॒रै॒त छी॑ । भा॒स्कर॑ कोनो का॒जे  
क॒नक॑ठ॒बक॑ आँ॒हिम॑ गेन॒ ब॒हथि॑ । ग॒प॒श॒प भ॒गए॑ ब॒हन॑ छ॒नहि॑ खाकि॒  
मी॑त भा॒ग ध॒वध॑ङ्ग ग॒गत॑ चै॒श्रव॑मे॒ ख॒एना॑ह । भा॒स्कर॑क पी॒ठ सो॒नाँ  
छ॒न ता॒हि नेन॑ ची॒न्हि॒ नहि॑ स॒कन॑थि॒न्ह । रँ॒हव॑ क॒मसँ॑ नि॒कनि॑  
सृ॒ष्टनो॑क क॒म्क॑मे रँ॒सि॑ ब॒हना॑ह । १०-१३॒ मिन॑ठक रँ॒द ज॒खन॑  
भा॒स्कर॑ रँ॒हव॑ नि॒कन॑नाह तँ॑ सृ॒ष्टनो॑क क॒मसँ॑ मी॑त भा॒ग रँ॒हवा॑गत  
छ॒नाह॑ । ए॒हि रँ॒व मी॑त भा॒गक॑ पी॒ठ भा॒स्कर॑क सो॒नाँ छ॒नहि॑ खा॒ह  
ता॒हि द्वा॒रे ए॒हि रँ॒व से॒हो सो॒नाँ-सोँ॒मी नहि॑ भ॒ह स॒कन॑ ।

डे॒वा प॒व ज॒खन॑ प॒हूँ॒च॒नाह॑ भा॒स्कर॑ त॒खन॑ मी॑त भा॒ग से॒हो पा॒छाँ-  
पा॒छाँ प॒हूँ॒चि॑ गे॒नाह॑ ।

“क॒हु मी॑त भा॒ग । क॒तए॑सँ॒ खा॒रि॑ ब॒हन॑ छी” ।

“ओ॒ह । की॑ क॒हु क॒नक॑ठ॒ब सा॒हेरँ॑ वो॒कि नेन॑हि । ओ॒तहि॑ दे॒वी  
भ॒ह गेन॑” ।

“ह॒नक॑व सृ॒ष्टनो॑सँ से॒हो भँ॑ँ॒ठ भेन॑ ब॒हय॑” ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

“नहि । उना रँहवएरँक वस्तुा सृष्टनोक प्रकोश्रुसँ ङ्कै । ङ्गदा उ२ सभ तँ डरे सर्द बँहत खँछि” ।

हेव भास्रव एकठा खिस्सा स्रनरँए नगनहि मीत भागकँ ।

तीन ठा कावी ह्रह्रव छन । एके वङ्ग-कपक । ओकवा सभकँ मोन भेनेक जे गवमा-गवम जिनेरी मध्वक दोकान जा२ कए खाग । से रँवा-रँवी उतए जएरँक प्रक्रम शुक भ२ गेन ।

पहिने एकठा ह्रह्रव पँचन ओहि दोकान पव । मानिक देखनकँक जे ह्रह्रव दोकानमे पैसि बहन खँछि, से रँखवा हँकि कए ओकवा मावनक । रँचावकँ रँड चोष्ट नगनेक । ङ्गदा जखन गाम पव पँचन तँ पृछना पव कहनक जे रँड सकोव भेन । जोखि कए जिनेरी खएरँक नेन भेठेन । दोसव ह्रह्रव खपनाकँ रोकि नहि सकन खा२ खपन सतकाव कवएरँक हेतु पँचि गेन मध्वक दोकान पव । कप-वङ्ग तँ एके वङ्ग बहए ओकवा सभक से मध्वक दोकानक मानिककँ भेनेक जे रँह ह्रह्रव हेवसँ खारि गेन खँछि । उ२ पानि गवम कए बहन छन । भवि ठँकना धीपन पानि ओहि ह्रह्रवक देह पव हँकनक । रँचावा ह्रह्रव जान रँचा२ कए भागन । खारि गाम पव पँचना पव हेवसँ ओकवा पृछन गेनेक, जे केहन सकोव भेन ।

“की कछु । गवमा-गवम जिनेरी छानि कए खुएनक । रँड नीक नोक खँछि मध्वक दोकानक मानिक” । रँचावा खपन नाज रँचरँत रँजन ।

“ङ्ग तँ ओहने सन छन जे एक रँव महादेरक दूध पीरँक सोव भेन छन । जे का निकनेत छन शिरनिगकँ दूध पिखओनाक रँद, पृछना पव कँहत छनाह जे माहदेर हनका हाथसँ दूध पिनहि । हमहू गेन बही ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

मन्दिरक रौहवक गनीमे दूधक ठघाव देखने बही । जौँ भगरान दूध पीरि बहन छथि तँ ङा ठघाव कतएसँ थायन । झुदा जखन शिरनिंग पव दूध चढ १ कए रौहव निकननहँ तँ लोक सभ प्रुछय नगनाह जे भगरान दूध पीरि बहन छथि । थारँ कहितहँ जे नहि पीरि बहन छथि तँ सभ कहितए जे ङा पापी छथि, से सभक हाथसँ भगरान दूध पीरि बहन छथिन्ह थाह एकवा हाथसँ पीरौक नेन मना कए देने छथिन्ह । सह पवि ओहि फरुव सभक भेन छन । थारँ थारँ स्रनू । भास्कर थारँक थिम्सा शुक कएनहि ।

दनु फरुव जिनेरी थाह कए थारि गेन । एक गोठेकेँ जेथि कए देनकेँक थाह दोसबकेँ तँ छानेत गेनेक थाह दैत गेनेक जेथरौ नहि कएनकेँक । तेसब फरुव ङा सोचैत दोकान दिशि रिदा भेन । साँम भह बहन छन । मधुबक दोकानक मानिक दोकान रँन कवरौक सूबसाव कए बहन छन । थारँ जे ओह काबी फरुवकेँ देखनहि तँ पित्त नहड़ि गेनहि । हुनका भेनहि जे एके फरुव रँव-रँव एतेक नीक सकोव भेठनो पव घुबि-घुबि कए थारि बहन थछि । से ओह एहि रँव ओकवा नेन रिशेष सकोव कवरौक प्रुण कएनहि । जखने ओह फरुव दोकानमे पैसन थारि दोकानक मानिक दवरँज्जा भीतबसँ रँन कए उँठासँ फरुवकेँ प्रुष्ट, ततावनहि । हेव बसामे रँनि दोकानक भीतबमे छेड़ि दोकान रौहवसँ रँन कए गाम पव चनि गेनाह ।

रँचावा फरुव रँडु मेहनतिसँ रँनहन तोड़ि रौहव भेन थाह नेउवागत गाम पव पहुँचन । जखन सङी-साथी सभ सकोवक मादी प्रुछनकहि तखन ओह कहनहि जे की कछ, थोथारैत-थोथारैत जान नए नेनक । जखन कहियेक जे गाम पव जाए दियह तँ कहए जे थारँव थारँ, थारँव थारँ । थारँगये नहि दैत छन । ततेक थोथारैतक जे चन नहि भह बहन थछि ।

“से मीत भाग, जखन कनकठव थारँकेँ दरौड़ि बहन छन तखन ओकवा सोनाँ हमरी रँसन छनहँ । हमव पीठ थारँक सोनाँ छन तेँ थारँ हमवा नहि देखि सकनहँ । हेव थारँ स्रनोक प्रुकोश्रमे किछ कान रँसनहँ





आ२ जखन ओतएसँ रौहव निकननहँ तँ नोक सभकेँ भून होएतेक जे  
अहाँ कनकठबसँ ओतेक कान धवि गप कए बहन छनहँ । अदा कोनो  
रौत नहि । हम ङा ककबो नहि कहरैक । अदा आजुक रौद मिथ्या  
कथनसँ अहाँ अपनारैकेँ दूब बाखू । रौजू अदहीक भुज्जा रँनाडू, माए  
आगये पठौनहि अछि,आएँ” ?

मीत भाग मूरी गौतने हँ मे मूरी डोनउनहि ।

७. पद्य

अ.पद्य रिस्यूत करि स्त्र. श्री वामजी चौधरी (1878-1952)



आ.पद्य गणेशी गुजन



अ.पद्य ज्योति मा चौधरी

अ.पद्य गजेन्द्र ठाकुर

अ.पद्य रिस्यूत करि स्त्र. श्री वामजी चौधरी (1878-1952)

रिस्यूत करि स्त्र. वामजी चौधरी (1878-1952)पव शोध-नेख रिदेहक पहिन अँकमे  
अ-अकाशित भेन छन । तकव रौद हनकव पुत्र श्री दुर्गान्द चौधरी, ग्राम-कदपुव,थाना-  
अंधवा-ठाठ १, जिना-मधुरनी करिजीक अअकाशित पाल्दुनिपि रिदेह कार्यानयकेँ डोकसँ  
रिदेहमे अकाशिनार्य पठौनहि अछि । अ गौठ-पचासेक पद्य रिदेहमे एहि अँकसँ  
धावाराहिक कसेँ अ-अकाशित भ बहन अछि ।

रिस्यूत करि- प. वामजी चौधरी(1878-1952) जन्म स्थान- ग्राम-कदपुव,थाना-अंधवा-  
ठाठ १,जिना-मधुरनी. मून-पगुल्लौव बाजे गौत्र-शांदिना ।

जेना शकबदेर असामीक रँदना मैथिनीमे बचना बचनहि, तहिना करि वामजी चौधरी



मानुषीसिंह संस्कृतम्

मैथिलीक अतिबिबुत ब्रैजबूनीमे सेहो बचना बचनहि । करि वामजतीक सभ पद्यमे बागक रर्ष अछि, ओहिना जेना रिद्यपतिक नेपानसँ प्राप्त पदारनीमे अछि, अ श्रभार हुंकव रारौ जे गरैया छनाहसँ प्रेवित बुमना जागत अछि । मिथिनाक लोक पछदेरोपासक छथि म्हादा शिरानय सभ गाममे भेटि जायत, से वामजती चौधरी महेश्वरी निखनहि अाँ चैत मासक हेतु ठुमरी अाँ भोवक भजन (पवाती/ श्रभती) सेहो । जाहि बाग सभक रर्षन हुंकव प्रतिमे अरैत अछि से अछि:

1. बाग रेखता
2. नारणी
3. बाग नपताना
4. बाग धूपद
5. बाग संगीत
6. बाग देशे
7. बाग गौरी
8. तिवहुत
9. भजन रिनय
10. भजन भैवरी
11. भजन गजन
12. हौनी
13. बाग श्याम कन्या
14. करिता
15. डम्क हौनी
16. बाग कागू काही
17. बाग रिहाग
18. गजनक ठुमरी
19. बाग पारस चौमासा
20. भजन श्रभती
21. महेश्वरी अाँ
22. भजन कीर्तन अाँदि ।

मिथिनाक नोचनक बागतवर्गिणीमे किछ बाग एहन छन जे मिथिने ठामे छन, तकव प्रयोग सेहो करिजी कएनहि ।

प्रस्तुत अछि हुंकव अप्रकाशित बचनाक धावाराहिक प्रस्तुति:-

4.

भजन रिनय

प्रभु रिन कौन कवत दुःख त्राणः । ।

कतेक दुखीके तावन जगमे

भरसागव रिन जन जानः ॥

कतेक चुकि हमबासे भू गेन,

स्व नएँ सुनएँ छी कानः । ।



खहाँके तौँ रौँनि पड़न खँछि,पतित उँधावण नामः ।  
नामक ठैक बाखुँ खँरँ प्रभुजोी हम छी खँधम जोना ।  
ध्रुपा कवरँ एहि जन पव कोन खँरँवि नेत खान ।  
वामजोी पतितके नाहि सहावा दोसव के खँछि खानः ॥

5.

रिहाग

भोना हेक पनक एक रँवः ॥  
कतेक दुँखीके तावन जगमे कतए गेनहुँ मेरो रँवः ॥  
भूतनाथ गौबीरवशँकव रिपति हक एहि रँवः ॥  
जोना ध्रुपा कवरँ शिरशँकव कष्टु मिठत के उँवः ॥  
रँडते दयानु जानि हम एनहुँ खँहाँक शिवण सुनि सोवः ॥  
वामजोीके नहि खान सहावा दोसव केयो नहि उँवः ॥



6.

ভজন মহেশীরাণী

ভোনা কখন কবরঁ দু: খ ত্রান ?

ত্রিধ তাপ মোহি খায় সতাবে নেন চহন মেরো প্রাণ ॥

নিশিরাসব মোহি হুখ সমরীনে পনভব নহি রিশ্রীম: ॥

রঁহুত ঔপায় কবিকে হম হাবন দিন-দিন দু: খ রঁনরঁন,

জ্যঁ নহি হ্রপা কবরঁ শিরশঁকব কণ্ঠ, কে মেঠত খান ॥

বামজীকে সবণ বাখু শ্রুত, ঋধম শিরোমণি জান ॥ ভোনা. ॥

7.

রিনয রিহাগ

বাম রিন্ব কৌন হবত দু: খ খান

কৌশনপতি হ্রপান্ন কোমন চিত



जाहि धवत झनि ध्यान ॥

पतित खनेक तावन एहि जगमे,

जग-गणिका पवधान । ।

केरठ,गृह्ण खजामिन तारो,

धोखहूषे नियो नाम,

नहि दयान्न तुख सम काँ दौसव,

कियो एक धनरान । ।

वामजी खशिवण खाय प्रकारो, भर ने कक मेरो  
त्राण ॥ वामरिन्नु ॥

(खन्नरतते)

(खन्नरतते)

खा.पद्य गंगेशी गुंजन



गंगेशी गुंजन(1942- ) । जन्म स्थान- पिनखरौड़, मधुबनी । एम.ए. (हिन्दी),  
रेडियो नाटक पब पी.एच.डी. । करि, कथाकाव, नाटककाव खा' उपन्यासकाव । मैथिलीक  
प्रथम चौरैष्टिया नाटक बुधिरधियाक लेखक । उंचितरजा (कथा संग्रह) क नेन साहित्य  
अकादमी पुरस्कार । एकव अतिबिबुत हम एकठा मिथ्या पविचय, लोक स्रनु (करिता



मानुषीमिह संस्कृतम्

संग्रह), अन्हाव- गजोत (कथा संग्रह), पहिन नोक (उपन्यास), आग भोठ (नाटक)प्रकाशित । हिन्दीमे मिथिनाचन की नोक कथाँ, मणिपद्मक लैका- रनिजाबाक मैथिनीसँ हिन्दी अन्वराद आ' शिद्ध तैयाव है (करिता संग्रह) ।

## 2. परिवर्तन

रदनु आंथि राँठ रदनु

गाडुक ड्हाहवि माझा चनु

रहूत गोठय भैठत ओहि ठाम

आदर्शिक राना लागू

मात्र शिद्ध धवि न ओठू

मनपसिन्न स्वरिधा नोठू

रैमतनरँ थिक र्गजन जी,

रानी रैशि बहओ सिह्वाभु

पोथी मे किछु अरसव पव

मंच, सभामे किञ्चु ने घब

सगरे शीतन-शीतन ड्केक

बौद नहि रैशि गजोबिया हैत

ठहाठी उञ्जव मथमन

हवियव घनगव गाछे गाछ



मंद परन स्वभित्त मरं रौत

जुनि नवकाड, वद्व स्वस्त्रिव

रुड अमून्या थिक गहो शीवीव

आमो तं पौतीक समान

मल्लक मे जाँतन सामान

ग.पद्य ज्याति मा चौधरी



ज्यातिके [www.poetry.com](http://www.poetry.com) में संपादकक चाँयस अरार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) आ हुनकव अंग्रेजी पद्य किडु दिन धवि [www.poetrysoup.com](http://www.poetrysoup.com) केव कथ पृष्ठा पव सेहो बहन ।

ज्याति मा चौधरी, जन्म तिथि - ३० दिसम्बर १९७५; जन्म स्थान - रेंकराव, मधुरनी ; शिक्षा- स्नामी रिरैकानन्द मिडिन स्कूल, टिंका साकरी गर्बुस हाडा स्कूल, मिसेज के एम पी एम गर्नुव कानेज, गन्दिवा गाहनी उपन यूनिवर्सिटी, आग सी डरून्य ए आग (काँस्ट्र एकाडुष्टरुआ); निरास स्थान- नन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुकुंकव मा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा मा, शिरीपष्टी । "मैथिली निखरौक अगुस हम अपन दादी नाना भाडा रँहिन सभके पत्र निखरौमे कएने छी । रँचसँ मैथिलीसँ नगार बहन अछि । - ज्याति

रिकास

रिकासशीनताक उँचतम् शिखव



मानुषीमिह संस्कृतम्

कत२ खा२ कतेक दूव पव भेठ२त ।  
ङा एकमात्र मृगमवीचिका त२ नहि  
जे नग गेना पव रिना जायत ।  
प्यासनकेँ नोभ द२ रँजारँए नेन  
हेव कनिक दूव पव देखायत ।  
मनुष रिज्ञान खाव तकनीकक नशीमे  
खाव कते दिन ओकवा खिहावगत बहत ।  
यात्रा मात्रसां प्रप्रति दूषित भेन  
भेठ२ मे की जानि कतेक हानि हएत ।  
पवभू खपन त्रानक सीमा संरुचित क२  
बूँहिकेँ सून त२ नहि कएन जायत ।  
गति निधविषा खा' सामनजस्य चाही  
जत२ रिकामक मात्रा नहि रोकन जायत ।  
संगहि प्रगति खा२ प्रप्रति दूनुक भैयाबी  
रिज्ञानक नाम पव नहि तोड़न जायत ।

ङा.पद्य गजेन्द्र ठाकुर

खखलुड भावत

धीव रीव छी मात्र रँव की,

खरँव होगत सङ्गपक ऋषा ङा,





मानुषीमिह संस्कृतम्

रूँह्मि ररुँसि पडुँन्य ररुँसथि,  
सडुँड ररुँड ररुँड नरुँडसथि,  
शुँषधीक रूँडी पकडुँड यथेगुँड,  
खनलुँ नलुँड डुँड वडुँड ।  
खुँगुँ नरुँडशुँड कडुँड डुँड डुँड,  
पवडुँडर डुँड डुँड डुँड डुँड,  
रूँह्मि रूँह्मिक डुँड नरुँड डुँड डुँड,  
डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड ।  
नडुँड डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड,  
डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड ।  
रूँड-डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड,  
डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड,  
डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड,  
डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड डुँड ।

१. संसुँड डुँड

(खुँगुँड)



मानुषीमिह संस्कृतम्

-गजेन्द्र ठाकुर

काचित् रूह्या आसीत् । तस्याः चत्वारः पुत्राः आसन् । ते पुत्राः  
अतीर सूयाः आसन् । माता रूह्या सर्वदा अपि तान् मातृभूमेः  
रिषये कथाः श्रावयति स्म । अतः ते सर्वे अपि वायुर्ष रिषये,  
अस्माकम् देशे रिषये रूह् श्रेष्ठानरः आसन् । एकदा देशेऽपि  
शत्रूणां आक्रमणं भवति । तदा सर्वस्मिन् गृहे अपि एकैकः  
ह्यह्यर्थं गच्छति । तदा रूह्या माता प्रथमं पुत्रम् आह्वयति । तिनकं  
धावयति- भवान् ह्यह्यर्थं गच्छतु- गति रदति । अनन्तरं प्रथमः  
पुत्रः ह्यह्यर्थं गच्छति- तत्र शौर्येण ह्यह्यं करोति, किन्तु रीव स्रग्नां  
प्राप्नोति । तदा एषा रूह्या माता प्रथमः पुत्रः मृतः - गति रात्र्वा  
श्रेणोति । रूह्या माता द्वितीयं पुत्रं आह्वयति- तमपि ह्यह्यर्थं  
प्रेषयति । सः अपि शौर्येण ह्यह्यं करोति । सः अपि रीव स्रग्नां  
प्राप्नोति । तदा रूह्या माता तृतीयं पुत्रं आह्वयति । तृतीयं पुत्रम्  
आनिर्हति-श्रीवा रदति । पुत्र, भवान् अपि ह्यह्यर्थं गच्छतु ।  
देशेऽपि वस्त्रनं करोतु । अस्माकं देशेऽपि कर्तव्यां अस्ति, अतः भवान्  
गच्छतु- गति रदति । तृतीयः पुत्रम् अपि ह्यह्यर्थं गच्छति । रीव  
स्रग्नां प्राप्नोति । तृतीयः पुत्रः अपि ह्यह्यर्थं गतवान् । तत्राभि  
कर्मह्यह्यं श्रवणम् । किञ्चित् दिनानन्तरं रात्र्वा आगता- तृतीयः  
पुत्रः अपि मृतः । तदा ग्रामस्थाः सर्वे अपि रूह्यायाः समीपम्  
आगतवन्तः । ते सर्वे रूह्याम् उक्तवन्तः - मातः - भवताः  
तृतीयः पुत्रः अपि वषावगे मृतः अस्ति । भवताः अन्तिमं समये  
सः भवताः वस्त्रार्थं भवताः कर्तव्यपानार्थम् आरथकम् अस्ति ।  
अतः भवती चतुर्थं पुत्रं मा प्रेषयतु । तदा रूह्या माता तेषां  
रचनं न श्रेणोति । रूह्या माता चतुर्थं पुत्रम् आह्वयति । रीव  
तिनकं धावयति- रदति अपि । पुत्रः भवान् गच्छतु- रिजयं  
प्राप्यम् आगच्छतु । अस्माकं देशेऽपि वस्त्रनम् अस्माकं कर्तव्यम् ।  
अतः भवान् गच्छतु । गति चतुर्थं पुत्रम् अपि प्रेषयति । एवं



मानुषीमिह संस्कृतम्

वर्षावंगेभिः कर्महस्तं प्रवृत्तम् । अनन्तुवं रात्रिं आगच्छति- चतुर्थं  
पुत्रः अपि मृतः अस्ति । तदा मातुः नेत्रे अश्रुणि आगच्छति ।  
तदा ग्रामस्य अधिकावी रूक्षायाः समीपम् आगच्छति । सः मातवं  
रदति- भोः मातः - रयं पूर्वमेव उक्तुरन्तुः - भरती चतुर्थं  
पुत्रं न प्रेषयेत् । पवन्तु भरती न श्रुतरती । चतुर्थम् अपि  
पुत्रं प्रेषितरती । रयम् गदानी किम् हर्मः । भरती गदानी  
बोदनं करोति चेत्- किम् प्रयोजनम्- गति पृच्छति । तदा  
माता रदति- भो महाशिया । मम् चतुर्थः पुत्रः मृतः गति  
बोदनं नास्ति । दुःखं नास्ति । मम् मातृभूमेः वस्त्रम् अरुणं  
कवणीयम्- गति गच्छा भरति । किन्तु देशस्य वस्त्रार्थं प्रेषयित्तुम्  
मम् पञ्चमः पुत्रः नास्ति खलु गति दुःखं भरति । एरम् अस्माकं  
देशस्य वस्त्राय कतिचन् मातवः शीत् पुत्राणां रनिदानं प्रतर्वाः -  
अतएव गदानीम् अपि अस्माकं देशेः स्वस्मितः अस्ति ।

स्वभाषितम्

रयम् गदानीम् एकं स्वभाषितं श्रुमः ।

षड् दोषाः प्रकषेणोह हातर्या भूतिमिच्छिता ।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आनस्य दीर्घसूत्रता ॥

रयम् गदानी यत् स्वभाषितं श्रुतरन्तुः तस्य अर्थः एरम् अस्ति ।  
यः प्रकषः ईश्वर्याम् गच्छति, समृद्धिम् गच्छति, अन्निरुद्धिम् गच्छति,



संपदाम् गच्छति, सः एतान् सरन्नि दोषान् दूरी क्रियात् । के के दोषाः । निद्रा- सर्वत्र निद्रा न कवणीयम् । तंद्रा- सर्वदा निद्रारस्थायामेर भ्रति तथा न भरेत- तंद्रा न भरेत । भयम्- सर्वेषु रिषयेषु भयं न भरेत् । क्रोधः / कोपः - यत्र- यत्र आरथकता अस्ति, तत्र कोपः कवनीयः - यत्र कोपश्च आरथकता नास्ति, तत्र क्रोधः न दर्शनीयः । आनन्दम्- रयं तु सर्वदा रिद्यार्थिनः एर । जीरने सरस्मिन् ऋणे अपि रयं शिक्कणं प्राप्नुमः, अतः अस्माश्च कदा आनन्दं न भरेत् । दीर्घसूत्रम्- कार्यम् अद्य करोमि न श्वः करोमि पवश्वः करोमि पवश्वः सायंकाने करोमि एरं रिनश्वः न भरेत् अद्यतन् कार्यम् अद्य करोमि, गदानीमेर करोमि गति एरं भरेत् ।

सम्भाषणम्

वामः प्रीतिम्/ नतां पृच्छति ।

वामः काम् पृच्छति ।

अहं रिज्ञानं जानामि ।

अहं गृहतः आगच्छामि ।

अहं रिदेशितः / रिद्यानयतः / माञ्जतः / कार्यानयतः / हिमानयतः / राठिकातः / नदीतः / मन्दिबतः / पश्वतः



अहं पैठिकातः उपनेत्रं स्त्रीकरोमि ।

कूप्यां जनम् अस्ति ।

अहं कूपीतः जनं स्त्रीकरोमि ।

अहं संचिकातः पत्रं स्त्रीकरोमि ।

अहं शीवदातः लेखनीम् स्त्रीकरोमि ।

अहं गजेन्द्रतः कवरम्त्रं स्त्रीकरोमि ।

अहं कोषतः लेखनीं स्त्रीकरोमि ।

अहं नदीतः जनम् आनयामि ।

भरन्तुः कृतः किम् आनयन्ति ।

गङ्गा हिमानयतः प्ररहति ।

गङ्गा कृतः प्ररहति । - प्रश्नं कर्तुम् ।

वामः रिद्यानयतः आगच्छति ।

वामः कृतः आगच्छति ।

अहं गच्छामि । अहम् आपणं गच्छामि ।

आपणतः गृहं गच्छामि । गृहतः रिद्यानयं गच्छामि । रिद्यानयतः  
गृहम् आगच्छामि ।

वमानन्दः कृतः कृतं गच्छति ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

वमानन्दः नखनङ्गु गच्छति । नखनङ्गतः खहमदारौदं गच्छति ।

खहमदारौदतः रैङ्गब्रुक गच्छति ।

ज्ञानार्थं वामायणं पठामि ।

अहं पाठनार्थं पठामि ।

खानन्दार्थं नृत्यं करोमि ।

खानन्दार्थं गीतं गायामि ।

पठनार्थं ग्रन्थानयं गच्छामि ।

उषधार्थम् उषधानयं गच्छामि ।

अहम् उत्तरं रदामि । भरतुः प्रश्नं रदतु ।

वाधाप्रश्नः किमर्थं रिद्यनयं गच्छति ।

वाधाप्रश्नः पठनार्थं रिद्यनयं गच्छति ।

वामः ध्यानार्थं मंदिरं गच्छति ।

वामः किमर्थं मंदिरं गच्छति ।

वामः किमर्थं दूबदर्शनं पठति ।

वामः खानन्दार्थं दूबदर्शनं पठति ।

भोजनार्थम् उपहारमन्दिरं गच्छति ।

वरीन्द्र उन्तिष्ठति । खादितः अपि उन्तिष्ठति ।



वरीन्द्र उपरिशेति । खादिलः अपि उपरिशेति ।

शौवदा निखति । चित्रा अपि निखति ।

नाठकं पशुति । चित्रम् अपि पशुति ।

अहं राक्यद्रयम् अपि रदामि ।

भरन्तुः रदन्तु । रदन्तिरा ।

अस्तु- अस्तु आगच्छामि ।

अस्तु पिरामि ।

रिठां ददातु । तथास्तु । देरः किम् रदति ।

देरः प्रलम्बः भरति । सः भरान्/ भरती पृष्ठति ।

पूर्वः - प्राची- गन्द्रः

दक्षिणः - खराची- यमः

पश्चिमः -श्रतीची- रकणः

उत्तरः -उदीची- करैवः

पूर्व-दक्षिण कोणः - आङ्गयकोणः -अग्निः

दक्षिण-पश्चिम कोणः - नैर्ऋतकोणः -नैर्ऋत

पश्चिम-उत्तरकोणः - रायर्यकोणः - मरुतः



मानुषीमिह संस्कृतम्

उत्तर-पूर्व कोशः - ग्रंथानुकोशः - ग्रंथः शिर्षरो

पद्य

सकौर्यं प्रति वमणीयम्,  
असल रचनं न रदनीयम्,  
पापकर्म न कवणीयम्,  
द्वाधनोभ मम लयणीयम् ।  
रिपतिकाने शत्रु आगता,  
तत्र स्थापिता मम सहनीयम्,  
पूर्णीरिजय मम कवणीयम्,  
सकौर्यं प्रति वमणीयम् ।

(अनुवर्तते)

†. मिथिना कना (आर्गा)





मानुषीमिह संस्कृतम्



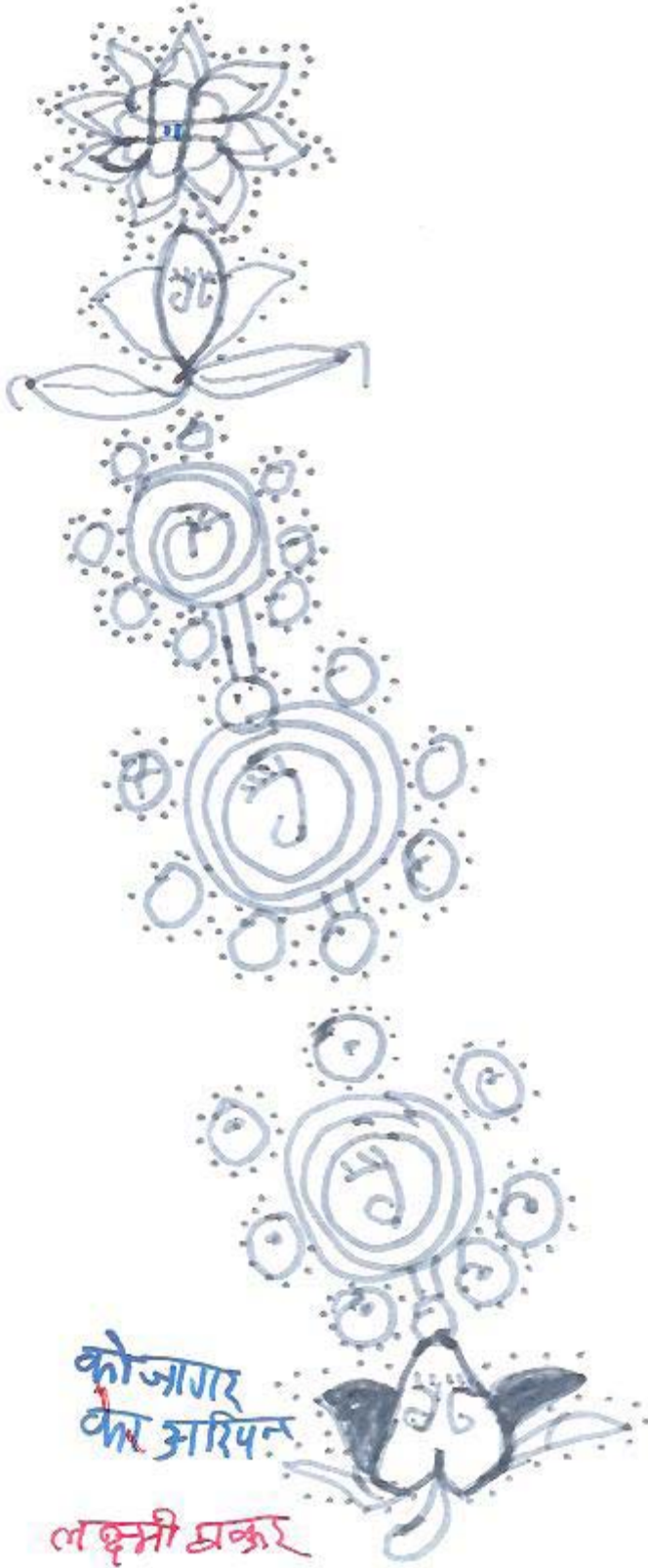
श्रीमति नम्मा ठाकुर, उम्र 60 वर्ष, ग्राम- हँठी-रानी, जिना मधुरनी ।

कोजगवाक अविपन

कोजगवा मिथिनामे आश्विन पूर्णिमाक वातिमे मनाउन जागत अछि । संध्यामे नम्माक पूजा कए मथानक भोग नगैत अछि । बत्रि जगवण कए चन्द्रमाक देखरौक आनन्द नैन जागत अछि । नीचाँक नरं अविपन पाव कए देरता घबमे प्ररेशि करैत छथि । कमनक हून आ२ पद चिन्ह एहि निमित्त देन गेन अछि ।



मानुषीमिह संस्कृताम्





मानुषीमिह संस्कृतम्

(खन्नरतते)

९. पारनि



नूतन ना: गाम : रेंकराव, मधुरनी, रिहाव; जन्म तिथि : ३ दिसम्बर  
१९७३; शिक्षा - बी एस सी, कन्या कानेज, बिनाग; एम एस सी, कान्पेवेठिर  
कानेज, जमशेदपुर; फेशन डिजागनिंग, निहठ, जमशेदपुर। "मैथिनी भासा खा  
मैथिन संस्कृतिक प्रति खासा खा" खादव हम्यव मोनमे रँहसँ ' रँसन खडि। गँठबनेठ  
पव तिवहताम्बर निपिक उपयोग देखि हम मैथिन संस्कृतिक उज्ज्वल भरिषक हेतु  
खति खागान्निह छी। "

निबंध - नूतन ना



रठसारित्री



मानुषीसिंह संस्कृतम्

मिथिनांचन में रठसारित्री ज्येष्ठ मासक अमारस्या तिथि केब मनौन जागत अछि । अहि पारनि के अहिरोती म्त्री स्त्रयम् के रैधरा म्ां ऋजु बाख नैन मनारैत छथि । अहि दिन नर रम्त्र , सामयिक हन, खाम, अरुवि, रैडक गाछ, र्ां सक रिथनि आदिक रैड महत्त्व अछि । सर सधरा म्त्री भोरे-भोव म्नादि क२ नर रम्त्र धावण क२ हून, नेरेण, रिथनि, अछिंजन, सूत, धूप-दीप न२ रैडक गाछ नग जागत छथि । ओत२ नियमपूर्क पूजा करैत छथि । तदोपवास्तु जन आ' अन्न ग्रहण करैत छथि । ब्रत कवनिहारि अहि दिन अनून खागत छथि ।

नरर्याहता के नैन अ पारनि रिशिष्ट अछि । पहिन रैव पारनि रैड रिसृत कप म्ां म्नाउन जागत अछि । एक दिन पहिन परनौतिन अडरौ अडरौगन खागथ छथि । ओहि दिन वाति क२ भुगरतीक गीत नाद म्गे हडि के गौव आ' उडि के रैड रैनाक बाधि नैन जागत अछि । माठिक रिसहवा रैना ओकवा चून म्ां टोवक२ बंग म्ां ब्रां गि नैन जागत अछि । पारनि के दिन तीन पात अडि पन पडत छै । रिषहवा गौवी समेत सारित्रीक पूजा होति अछि । रैडक गाछ के त्रिपेक्षण कैन जागत अछि जाहि में गाछक जडि में खाम स नगाक जन टावि सूत नपेठ क रिथनि डोनेन जागत अछि । आवतीक रौद कथा कहन जागत अछि आ परनौतिन के हाथे प्ां च ठा अगहर के अरुवि आ नरेद पड सागन जागत अछि । अहि पारनि में कहन जाग रना कथाक सावशि येह अछि जे

## १०. संगीत शिक्षा-गजेन्द्र ठाकुर

एक मात्राक दूठा रौनके धागे आ२ चावि ठा रौनके धागेतिठ सेहो कहन जागत अछि ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

तानक पविचय

तान कहवरौ

४ ष्टी मात्रा, एकष्टी रिभाग, खां पहिन मात्रा पव सम ।

धागि

नाति

नक

धिन ।

तीन तान त्रितान

१७ ष्टी मात्रा, ४-४ मात्राक ४ ष्टी रिभाग । १,३ खां १३ पव तानी खां ९ म मात्रा पव खानी बहत खंति ।

धा धिं धिं धिं

धा धिं धिं धा

धा तिं तिं ता

ता धिं धिं धा

मपतान

१० मात्रा । ४ रिभाग, जे फमसँ २,३,२,३ मात्राक होगत खंति ।

१ मात्रा पव सम, ७ पव खनी, ३,+ पव तानी बहत खंति ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

धी ना

धी धी ना

ती ना

धी धी ना

तान कपक

१ मात्रा । ३,२,२ मात्राक रिभाग ।

पहिन रिभाग खानी, रौदक दू ठा भवन होगत खञ्जि ।

पहिन मात्रा पव सम खा२ खानी, चाबिम खा२ छठम पव तानी होगत खञ्जि ।

धी धा व्रक

धी धी

धा व्रक

११. रौनानां प्रते-गजेन्द्र ठाहव

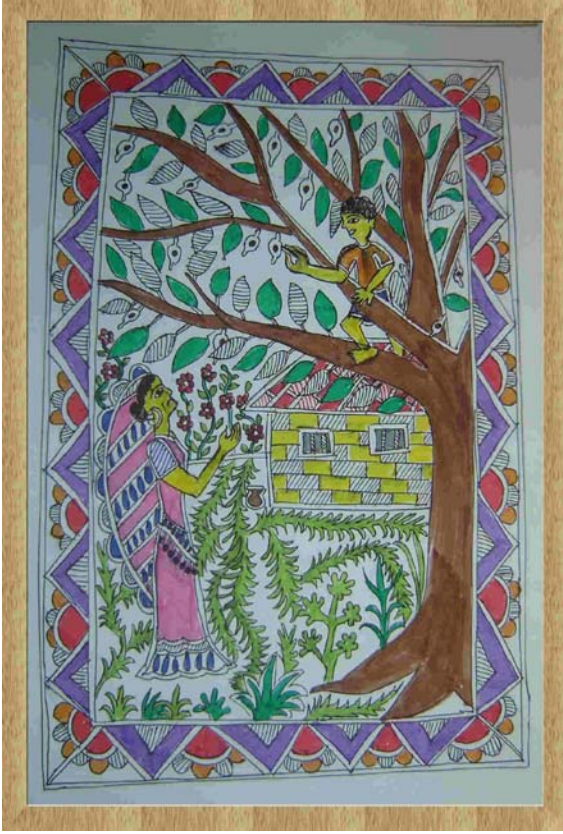
रौनानां प्रते

— गजेन्द्र ठाहव





## रँगियाक गाछ



चित्र ज्योति मा चौधरी

एकठा मसोमात छनीह खा' हनका एकेठा रैठा छनन्हि । ओ' छन रँडु चूस-  
चनाक ।

एक दिनुका गप अछि । ओ' स्त्री जे छनीह, अपना रैठाके रँगिया रँना कए  
देनखिन्ह । ओहि रँनाकके रँगिया रँडु नीक नगेत छनैक । से ओ' एहि रँव  
ओ' एकठा रँगिया रँडु ीमे बोपि देनक । ओतए गाछ निकनि आएन ।  
रँगियाक गाछ, नखि देखन ने सुनन ।

माय रैठा ओहि रँगियाक गाछक खुरँ सेरा कबए नगनाह । कनेक दिनमे ओहि  
गाछमे खुरँ रँगिया फइय नागन । ओ' रँचा गाछ पव चढा कए रँगिया  
तोड़ा कए खागत बहत छन ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

एक दिनुका गप अछि । एकठा डागन रूढि या वस्तुसँ जा' बहन छन । ओकवा मनुबन्धक मसुखाग रँना कए थायमे रँडु नीक नगैत बहक । से ओ' जे रँचार्केँ गाछ पव चढन देखनक, तँ ओकव मोन ब्रसहुस कवए नगनैक । आरँ ओ' रूढ या मोनसूरा रँनरँए नागन जे कोना कए ङा रँचार्केँ हूसियारी आ' एकवा घब न' जा कए एकव मसुखाग रँना कए थाग ।

रँचार्केँ असगव देखि ओ' नग गेन आ' रँचार्केँ कहनक-

“रौआ एकठा रँगिया हमवा नहि देरँ । रँडु भूथ नागन अछि ।

रँचा ओकव हाथ पव रँगिया देरँय नागन ।

“रौआ हम हाथसँ कोना नेरँ रँगिया हथागन भ' जायत” ।

रँचा रँगिया माथ पव बाथए नागन ।

“हँ हँ माथ पव नहि बाथू । मथागन भ' जायत” ।

रँचा छन दस रँधियावक एक रँधियाव । खोजछमे रँगिया देरँए नागन ।

”ङा की करैत छी रौआ । रँगिया खौडागन भ' जायत, अहाँ नूकि कए रौवामे दए दिख” ।

झदा रँचा तँ छन गोनू न्नाक रँमू जे गोनू न्नाक मून-गोत्रेक ।

राजन-

“नएि गए रूढि या । तौँ हमवा रौवामे रँद कए भागि जेमह । माघ हमवा ठग सभसँ सहचेत बहरौक हेतु कहने अछि” ।





मानुषीमिह संस्कृतम्

झुदा रूढि यो छन ठगिन रूढि या । ठकि हिमिया कए रौनी-रौनी दए कए  
ओकवा मना नैनक । जखने रँचा मूकन ओ' ओकवा रौवामे कसि कए चनि  
देनक । रूढि या बसुामे थाकि कए एकठा गान्धक छहबिमे रँसि गेनि ।

कनेक कानमे ओकवा खाँखि नागि गेनेक । रँचा मौका देखि कोनहना कए  
ओहि रौवासँ रँहव रँहवा गेन खा' भोजन माँठि, पाखव खा' काँठि-कूस रौवामे  
ध' कए ओहिना रँहि कए पड़ । गेन ।

रूढि या जखन सूति कए उठन खा' रौवा न' कए खागू रँढन तँ ओकवा रौवा  
भविगव रूमएनेक । मोने-मोन प्रसन्न भ' गेनि जे सोचि जे द्रुग-पुग  
मसुखाग खएरौक मौका रँहुत दिन पव भेठन टैक ओकवा । बसुामे भोजन  
माँठिसँ पानि खसए नागन तँ ओकवा नगनेक जे रँचा नगरी कए बहन खँडि ।  
ओ' कहनक जे-

”माथ पव नहँका कए बहन छह रौखा । कोनो राँत नहि । घब पव तोहव  
मसुखाग रँना कए थायरँ हम” ।

कनेक कानक राँद काँठि गवए नगनेक रूढि यारँ । कहनक-

”रौखा । रिधू काँठि बहन छी । कोनो राँत नहि कतेक कान धवि काँठरँ” ।

रूढि याक एकठा रँठी छनेक । गाम पव पहुँचि कए रूढि या ओकवा कहनक,  
जे खाग एकठा मोठि-सोठि शिकाव खँडि रौवामे । माय रँठी जखन रौवा  
खोननक तँ निकनन माँठि, काँठि खा' पाखव । कोनो राँत नहि ।

रूढि या भेष रँदनि पहुँचन फेबसँ रँगियाक गान्ध तव ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

एहि रैव रँचा ओकवा नथि चान्हि सकन । ढ्ढदा जखन ओ' न्मुकि कए रँगिया  
रौवामे देरौक गप कहनक तँ रँचाकेँ खानिका भेनेक ।

”गए रँढि या । तौली छँ ठगिन रँढि या” ।

ढ्ढदा रँढि या जखन सम्पत खएनक तँ ओ' रँचा न्मुकि कए रँगिया रौवामे  
देरँए नागन । खा' हरेव रैह रात ।

एहि रैव रँढि या कतहू ठाढ नहि भेन । सोमे घब पहुँचन खा' रँढी नग  
रौवा बाथि नहाए-सोनाए चनि गेन । रँढी जे रौवा खोननक तँ एकठा नँढी  
रँना रँचाकेँ देखनक । ओ' प्ढनक-

”हमव केशी नमगव नहि खड्ढि किएक” ।

”खनक माय खनक माथ ङुखडि मे दए समाठसँ नहि ढुठने होयतीह ।  
तेँ” । रँचा तँ छन दस होसियबक एक होसियाव तेँ ।

रँढि याक रँढी खपन केशी रँढेरौक हेतु खपन माथ ङुखडि मे देनहि, खा'  
ओ' रँचा ओकवा समाठसँ काँठए नागन । ओकवा मावि ओकव मासु रँनेनक ।  
रँढि या जखन पौथिसँ नहा कए खायन तँ रँढि याक खागू ओ' मासु पवसि  
देनक ।

जखने ओ' खेनाग पव रँसनि तँ नगमे एकठा रिनाडि छन से रँजि उँठन-

”म्याँडु । खपन धीया खपने थाँडु । म्याँडु” ।

”रँढी एकवा मासु नहि देनहूँ की । तँ रँजि बहन खड्ढि” ।

ओ' रँचा रिनाडि क खाँगा मासु बाथि देनक ढ्ढदा रिनाडि मासु नहि खएनक ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

थारै रूढि याक माथ घुमन । ओ' रैठीकेँ सोव कएनक तँ ओ' रँचा समाठ न'  
कए थायन था' ओकवा मावि देनक ।

हेवसँ रँचा रँगियाक गाछ पव चढि रँगिया खए नागन । रँडु नीक नगेत  
डन ओकवा रँगिया ।

२.प्रातः कान ब्रह्मद्वर्तु (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सरप्रथम  
अपन दनु हाथ देखरौक चाही, था' अ श्लोक रँजरौक चाही ।

कवाग्रे रसते नम्मीः कवमञ्च सबस्रती ।

कवमूने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक थागाँ नम्मी रँसत छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मूनमे  
ब्रह्मा स्थित छथि । भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक  
थीक ।

१२. पञ्चमी श्रद्ध-गजेन्द्र ठाकुर



मानुषीमिह संस्कृतम्



पंजी-संग्राहक- श्री रिद्यानंद मा पञ्जीकाव (प्रसिद्ध मोहनजी)

श्री रिद्यानन्द मा पञ्जीकाव (प्रसिद्ध मोहनजी) जन्म-09.04.1957, पल्डूखा, ततेन, ककरौड(मधुरनी), बशीढय(पूर्विया), शिरनगव (खवबिया) खां सम्प्रति पूर्विया। पिता न्ह्रु खौत पञ्जीशाम्त्र मार्टुल्ल पञ्जीकाव मोदानन्द मा, शिरनगव, खवबिया, पूर्विया। पितामह-म्र. श्री भिथिया मा। पञ्जीशाम्त्रक दस र्ष धवि 1970 ङ.सँ 1979 ङ. धवि अध्यायन, 32 र्षक रयससँ पञ्जी-प्रर्र्धक संर्र्धन खां संवस्करणे संर्र्धन। द्रुति- पञ्जी शाखा पुस्तकक निप्यातवण खां संर्र्धन- 800 पुग्रासँ अधिक खंकन सहित। पञ्जी नगवमिक निप्यानुवण ७ संर्र्धन- नगलुग 600 पुग्रासँ ङुपव(तिवहृता निपिसँ देरनागवी निपिमे)। ग्वक- पञ्जीकाव मोदानन्द मा। ग्वक ग्वक- पञ्जीकाव भिथिया मा, पञ्जीकाव निवसू मा प्रसिद्ध रिशुनाथ मा- सौवाठ, पञ्जीकाव नृठन मा, सौवाठ। ग्वक शाम्त्रार्थ परीष्का- दवभुंगा महाबाज रुमाव जीरेशुव सिंहक यत्नापरीत संस्कावक खरसव पव महाबाजाधिबाज(दवभुंगा) कामेशुव सिंह द्वावा आयोजित परीष्का-1937 ङ. जाहिमे मौथिक परीष्काक द्वाया परीष्काक म.म. डां. सब गंगानाथ मा हुनाह।

महाबाजाधिबाज ३. मान् मिथिनेशिक खान्नानुसाव पडुर्वाविपावक नौकिक खां श्रेणिक रयरस्था पञ्जीकाव नौकनि जे शिव कएनन्हि से प्रकाशित भेन हुन खां ङहो प्रार्थना हुन जे ताहि मध्य जनिका किहु रकतुरा होगन्हि से प्रार्थना पत्र द्वावा श्री ३. मान् मध्य निरेदन कवथि, ततः निदान रिशिगु, सभा मध्य एकव परामर्श कए पुनः प्रकाशित कएन जायत।

एतएसँ १ सँ १३. धवि श्रेणी रना देन गेन। ठेव रिराद उठन जे पाग नए कए उंच श्रेणी देन गेन।

पडुर्वाविपावक नौकिक नाममे कतहू नौकिक तँ कतहू खसन नाम हुन।



## किछ उंदाहवण खड्डि-

१. सिंहराड-मथुरेश ठाकुर
२. मनियारी- मधुपति मिश्र
३. खमौन-रौनकवाम पाठक
४. भवाम- धीतवी
५. रसन्तुपुव- माधुर मिश्र
६. कौकडीली- वामेश्वर मिश्र
७. निलानन्द चौधरी- पिल्लारुड्ड
८. एडु- भैय्या मिश्र
९. खुणैनियाँ- भुरानीदतु मा
१०. नम्कमीपति मिश्र- धगजवी
११. कन्तु मा- चानपुवा
१२. ठंरुनान महिधव मा-पेकपाड
१३. रिगुदतुपुवचिकनौठ (रुजथरुवपुव)
१४. चान पाठक- गजहवा
१५. काकठाकुर- धमदाहा
१६. खाशी ध्यामी- वंगपुवा(पुर्णियाँ)

(खनुवरुते)

१३. संस्कृत मिथिना -गजेन्द्र ठाकुर

म.म. शंकर मिश्र



मानुषीमिह संस्कृतम्

शंकव मिश्रसँ संरंधित रँहृत वाम जनश्रुति प्रसिह्ण ख्छि । ख्याची  
रूह्ण भए गेन छुनाह, पवन्तु पत्ररिहीन बहथि । पनो भरानी  
दुःखसँ काँठ भए गेन छुनीह । तखन ख्याची मिश्र रौरा  
रौद्यनाथसँ पत्रक याचना कएनहि ख्छि हनकव मनोकामना पूर्ण  
भेनहि-स्रयं शंकव भगरान खरतवित भेनाह ख्छि ताहि द्वारे  
रौनकक नाम शंकव पडन । जन्म पव गामक ख्या किंरा चमैन  
गनाम मँगनथिन्ह, झुदा पविरावक नगमे किछु नहि छन ख्छि ताहि  
हेतु भरानी रचन देनथिन्ह जे रौनकक प्रथम कमाग खहाँकेँ दए  
देरँ । से जखन एक रौव बाजा शिर सिंह खुशी भए रौनककेँ  
कहनथिन्ह जे खहाँ जतेक सोना-चाँदी नए जा सकी नए जाडँ ।  
रौनक मात्र धबिया पहिबने छुनाह तेँ मात्र किछु सोनाक छुड नए  
जाइ सकनाह, ख्छि सेहो भरानी खपन रचनक खनुकर्पे ख्या-  
चमैनकेँ दए देनथिन्ह । चमैन ओहि पागसँ एकठाँ पौखवि  
सबिसरमे खुनरँएनहि, जे चमनियाँ पौखिक नामसँ एखनो रिद्यमान  
ख्छि ।

१४. मैथिली भाषापक (२)- गजेन्द्र ठाकुर/ नागेन्द्र कमार सा

मुन्याकिन

खनुतम- 14-15

उतम- 12-13

रँड-रँडि या- 09-11



मानुषीमिह संस्कृतम्

1. तग्गवः क. खाँठ थ. रौँठ. ग. पेय पदार्थ घ. एहिमे सँ कोनो नहि ।
2. दोमरँ: क. हिनायरँ थ. यनेपूरँक सोचरँ ग. सोचि कए कवरँ . घ. एहिमे सँ कोनो नहि ।
3. ओधि: क. रौँसक जड़ि थ. गाँछ जवायरँ ग. गाँछ रोपरँ घ. डारि खलु कवरँ ।
4. पेँठाँट: क. कान काँठरँ थ. गँलीव रौँसन. ग. धान नहि देरँ. घ. कान पाथरँ ।
5. दोवा: क. देखरँ थ. धान बाथरँ. ग. उँपेक्का कवरँ. घ. उँथेव पात्र ।
6. मेघडुँब: क. ड़ाता थ. ड़ुजरँ. ग. सुखायरँ. घ. एहिमे सँ कोनो नहि । /
7. रौँसरिँष्टी: क. सवियायरँ थ. हेंकरँ. ग. रौँसक रौँन घ. गेँठरँ ।
8. ज़ारी: क. नडरँ थ. नगड़ १ होएरँ. ग. जानाकाव पात्र. घ. मिनान होयरँ ।
9. कनसुपती: क. नुखा रौँनरँ-रौँनाएरँ थ. नुखा सुखायरँ. ग. नुखा जवाएरँ. घ. सुखायन रौँसक पात ।
10. ड़िँष्टी: क. कोडरँ थ. चास देरँ. ग. पथिया. घ. ज़ोतरँ ।
11. दारि: क. कपड़ १ रौँनरँ थ. पेँघ कत्रा. ग. तूव तुनरँ. घ. ड़ाड़ घोँठरँ ।
12. रौँनि: क. रौँखा रौँड़ग कवरँ थ. रौँखा उँखाड़रँ. ग. रौँखा दहाएरँ. घ. मजदूबी ।
13. ड़ौँपरँ: क. खवरँधरँ थ. सोहड़ि जाएरँ. ग. ड़ुपवसँ काँठरँ घ. दूनाव कवरँ ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

14. कवची: क. खरथ कवर. ख. डूपवसँ कार्ठर. ग. रौसक पातव शीखा. घ.  
एहिमे सँ कोनो नहि ।

15. भानवि: क. तिवोधान होएर. ख. केवाक पात. ग. दरौडर. घ. हँसायर ।

उत्तर

मैथिली भाषापक (२) केव उत्तर:

1. ग. पेय पदार्थ ।
2. क. हिनायर ।
3. क. रौसक जड़ि ।
4. ख. गँलीव रौसन ।
5. उथेव पात्र ।
6. क. ड्वाता ।
7. ग. रौसक रौन ।
8. ग. जानाकाव पात्र ।
9. घ. सुखायन रौसक पात ।
10. ग. पथिया ।
11. ख. पेघ कत्ता ।
12. घ. मजदूबी ।
13. ग. डूपवसँ कार्ठर ।
- 14 . ग. रौसक पातव शीखा ।





मानुषीमिह संस्कृतम्

15. थ. केवाक पात ।

युनार्किन

अंतम- 14-15

उंतम- 12-13

रैंड-रैंडि या- 09-11

१३. वचना लेखन-गजेन्द्र ठाकुर

र्यङ्गन ४२ ठा अछि ।

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न्

प फ र् ल म्

य व न् र्

श ष स्

ह

य र् न् सान्नासिक सेहो होगत अछि, यँ रँ नँ खाइ निरनासिक ।

एकव अतिविक्रत दू ठा खाव र्यङ्गन अछि- खन्नाब खाइ रिसर्जनीय रा रिसन्ना ।



मानुषीसिंह संस्कृतम्

ॐ दूनूठा सुवक अननुव प्रहकतु होगत अछि ।

रिसर्जनीय मून रर्ण नहि अछि, रवन् स् रा व् केव रिकाव थीक । रिसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आह किछु रुपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्मामूनीय आह उपधानीय । जिह्मामूनीय मात्र क आह थ सँ पूर प्रहकतु होगत अछि, दोसव मात्र प आह फ सँ पूर ।

अनुस्वार, रिसर्जनीय, जिह्मामूनीय आह उपधानीयकेँ अयोगराह कहन जागत अछि ।

उपरोकत रर्ण सभकेँ छोटि 8 ठाँ आव रर्ण अछि, जकवा यम कहन गेन अछि ।

हँ खँ गँ घँ (यथा- पनिक क्ली, चख हनुतः, अगु ग्लिः, घु ग्लन्ति)

पञ्चम रर्ण आगाँ बहना पव पूर रर्ण सदृशे जे रर्ण रीचमे उचावित होगत अछि से यम भेन ।

यम सेहो अयोगराह होगत अछि ।

(अनुवर्तते)

मैथिलीक मानक लेखन-शैली

1. जे शिङ्ग मैथिली-साहित्यक प्राचीन कानसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

ब्राह्म

अब्राह्म

एथन

ठाम

जकव, तकव

अथन, अथनि, एथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठिमा

जेकव, तेकव



मानुषीमिह संस्कृतम्

तनिकव  
श्राह)  
खड्डि

तिनकव । (रैकल्पिक कर्पे

ईड्ड, खहि, ए ।

2. निम्ननिथित तीन प्रकारक कर्प रैकल्पिकतया खपनाउन जाय:  
भ गेन, भय गेन रा भए गेन ।  
जा बहन खड्डि, जाय बहन खड्डि, जाए बहन खड्डि ।  
कव' गेनाह, रा कवय गेनाह रा कवए गेनाह ।
3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत खड्डि यथा कहननि रा कहनन्हि ।
4. 'ए' तथा 'ओ' ततय निखन जाय जत' स्रष्टतः 'खग' तथा 'खड' सदृश उच्चारण गष्ट हो । यथा- देखेत, डलेक, रौखा, डोक गवादि ।
5. मैथिलीक निम्ननिथित शिद्ध एहि कर्पे श्रयङ्ग होयतः  
जेह,सह,गएह,ओह,लेह तथा देह ।
6. ह्रस्व गकारांत शिद्धमे 'ग' के वृत्त कवरँ सामान्यतः खग्राह थिक । यथा- श्राह देखि खरँह, मानिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।
7. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण खादिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु खाधुनिक श्रयोगमे रैकल्पिक कर्पे 'ए' रा 'य' निखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, खयनाह रा खएनाह, जाय रा जाए गवादि ।
8. उच्चारणमे दू स्ववक रीच जे 'य' ध्वनि स्रतः खरि जागत खड्डि तकवा नेथमे स्थान रैकल्पिक कर्पे देन जाय । यथा- धीखा, खढखा, रिखाह, रा धीया, खढया, रियाह ।



मानुषीमिह संस्कृतम्

9. सान्नासिक स्रुतं स्रुवक स्थान यथासंभर 'ए' निखन जाय रा सान्नासिक स्रुव ।  
यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैएँ, कनिएँ, किवतनिएँ ।
10. कावकक रिभक्तिगुक निम्ननिखित रूप ग्राह:-  
हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे ।  
'मे' मे खनुस्राव सर्रथा राज्ज थिक । 'क' क र्केकपिक रूप 'केव' बाखन जा सकैत थिछि ।
11. पूर्रकानिक फियापदक रौद 'कय' रा 'कए' खर्राय र्केकपिक रूपेँ नगाउन जा सकैत थिछि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।
12. माँग, भाँग थिदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि निखन जाय ।
13. खर्क 'न' ओ खर्क 'म' क रौदना खनुसाव नहि निखन जाय(खपर्राद-संसाव सभाब नहि), किंतु छापक सुर्रिधार्थ खर्क 'ङ' , 'ए', तथा 'ण' क रौदना खनुस्रावो निखन जा सकैत थिछि । यथा:- खर्क, रा खक, खर्रन रा खचन, कर्ठ रा कंठ ।
14. हनंत चिह्न नियमतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिगु संग थकावांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।
15. सभ एकन कावक चिह्न शिद्धमे सँठा क' निखन जाय, हँठा क' नहि, संहाज्ज रिभक्तिगु हेतु हवाक निखन जाय, यथा घब पवक ।
16. खनुनासिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वावा र्राज्ज कयन जाय । पवंतु द्वाद्राक सुर्रिधार्थ हि समान जठिन मात्रा पव खनुस्रावक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रौदना कयन जा सकैत थिछि । यथा- हिँ केव रौदना हि ।
17. पूर्रि रिवाय पासीसँ ( । ) सूचित कयन जाय ।
18. समस्त पद सँठा क' निखन जाय, रा हागफेनसँ जोड्डी क' , हँठा क' नहि ।
19. निख तथा दिख शिद्धमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।



20.

त्राह  
त्राहाह

1. होयर्रना/होर्रयर्रना/होमयर्रना/ हेर्र'र्रना,  
हेम'र्रना  
होयर्रक/होएर्रक
2. खा/खाह खा
3. क' नेने/कह नेने/कए नेने/कय नेने/  
न'/नह/नय/नए
4. भ' गेने/भह गेने/भय गेने/भए गेने
5. कव' गेनाह/कवह गेनेह/कवए गेनाह/कवय गेनाह
6. निख/दिख  
निय',दिय',निख',दिय'
7. कव' र्रना/कवह र्रना/ कवय र्रना करे  
र्रना/क'व' र्रना
8. र्रना  
र्रना
9. खाङ्गन  
खाङ्ग
10. प्रायः  
प्रायह



मानुषीमिह संस्कृतम्

11. दूः थ

दूथ

12. चनि गेन

चन गेन/चैन गेन

13. देनथिन्ह

देनकिन्ह, देनथिन

14. देखनन्हि

देखननि/ देखनैन्ह

15. छथिन्ह/ छनन्हि

छनैन्ह/ छननि

छथिन/

16. चनैत/दैत

चनति/दैति

17. एखनो

खखनो

18. रैठन्हि

रैठन्हि

19. उ' / उ२ (सरनाम)

उ

20. उ (संयोजक)

उ' / उ२

21. हाँगी/हान्नि

हाँगँग/हाँगँ



मानुषीमिह संस्कृतम्

22. जे

जे' / जे२

23. ना-नुक्वव

ना-नुकव

24. केनहि / कएनहि / कयनहि

25. तखन तँ

तखनतँ

26. जा' बहन / जाय बहन / जाए बहन

27. निकनय / निकनए नागन

रँहवाय / रँहवाए नागन

निकन' / रँहरो नागन

28. उतय / जतय

जत' / उत' / जतए / उतए

29. की हूङन जे

कि हूङन जे

30. जे

जे' / जे२

31. कूदि / यादि (मोन पावर)

कूगद / यागद / कूद / याद

32. गहो / ओहो

33. हँसए / हँसय

हँस'



मानुषीमिह संस्कृतम्

34. लौ खाकि दस/लौ किंरा दस/लौ रा दस

35. सप्स-सप्सव  
सास-सप्सव

36. छह/सात  
छ/छः /सात

37. की  
की/की२(दीर्घाकावाप्तुमे रर्जित)

38. जरौरै  
जरारै

39. कबधताह/कबयताह  
करेताह

40. दनान दिशि  
दनान दिशि

41. गेनाह  
गधनाह/गयनाह

42. किछु खब  
किछु ँब

43. जागत छन  
जाति छन/जेत छन

44. पहुँचि/भेठि जागत छन  
पहुँच/भेठ जागत छन





45. जरौन(यरा)/जरान(होती)

46. नय/नए क/क२

47. न/न२ कय/कए

48. एखन/खखने

खखन/एखने

49. खहीकेँ

खहीकेँ

50. गहीब

गहीब

51. धाव पाव केनाग

धाव

पाव केनाय/केनाए

52. जेकाँ

जेकाँ/जकाँ

53. तहिना

तेहिना

54. एकव

खकव

55. रँहिनउ

रँहनोग

56. रँहिन

रँहिनि



मानुषीमिह संस्कृताम्

57. रँहिन-रँहिनोग

रँहिन-रँहनड

58. नहि/ले

59. कवरौ/कवरौय/कवरौए

60. त/त २

तय/तए

61. भाय

भे

62. भाँय

63. यारत

जारत

64. माय

मे

65. देह्नि/दएह्नि/दयह्नि

दह्नि/दैह्नि

66. द/द २/दए

किञ्च खव शिङ्ग

मानक मेथिनी\_३

तका कए तकाय तकाए

पैरे (on foot) पएरे



मानुषीमिह संस्कृताम्

ताहमे ताहमे

पत्रीक

रँजा कय/ कए

रँननाय

कोना

दिनुका दिनका

ततहिँ

गवरँउनहिँ गवरँनहिँ

रौब रौबू

चेह चिह(अशुक्र)

जे जे

से/ के से/के

एखनका अखनका

भूमिहाव भूमिहाव

सुगव सुगव

मठहाक मठहाक

डूरिँ

कवगयो/ओ करैयो

परावि परांग

मगड 1-साँटी मगड 1-साँटी

पएरे-पएरे पेरै-पेरै



मानुषीमिह संस्कृतम्

थेनएरौक थेनेरौक

थेनाएरौक

नगा

होए- हो

रूँमन रूँमन

रूँमन (संरौधन अर्थमे)

येह यएह

तातिन

अयनाय- अयनाग

निन्न- निन्द

रिन्न रिन

जाए जाग

जाग(*in different sense*)-*last word of sentence*

उत पव आरि जाग

ने

थेनाए (*pl ay*) -थेनाग

शिकागत- शिकायत

ठप- ढप

पढ- पठ

कनिए/ कनिये कनिषे

वाकस- वाकशे



मानुषीमिह संस्कृतम्

होए/ होय होग

थडूबदा- ठूबदा

रूमेनहि (*different meaning- got understand*)

रूमएनहि/ रूमयनहि (*understood himself*)

चनि- चन

खधाग- खधाय

मोन पाइनखिन्ह मोन पावनखिन्ह

कैक- कएक- कगएक

नग नग

जबेनाग

जबउनाग- जबएनाग/जबयनाग

होगत

गइरैनहि/ गइरौनहि

चिखेत- (*to test*) चिखगत

कबगयो(*willing to do*) करैयो

जेकवा- जकवा

तकवा- तेकवा

रिदेसब स्थानेमे/ रिदेसबे स्थानेमे

कबरयनहूँ/ कबरएनहूँ/कबरैनहूँ

हाविक (उँचावण हागवक)

ओजन रजन



मानुषीमिह संस्कृताम्

आधे भाग/ आध-भागे

पिचा/ पिचाय/पिचाए

नए/ ने

रैचा नए (ने) पिचा जाय

तखन ने (नए) कहैत खड्डि ।

कतेक गोठे/ कताक गोठे

कमाग- धमाग कमाग- धमाग

नग नग

थेनाग (for playing)

डुथिह डुथिन

होगत होग

क्या कियो

केसे (hair)

केस (court-case)

रैननाग/ रैननाय/ रैननाए

जबेनाग

कवसी कसी

चबचा चर्चा

कर्म कबम

डुरौरैय/ डुमारैय

एखनका/ अखनका



मानुषीमिह संस्कृतम्

नय (राकाक थतिम शेद्धे)- न

कएनक केनक

गवमी गर्मी

रँवदी रदी

सुना गेनाह सुना/सुनाह

एनाग-गेनाग

तेनाने घेवनहि

नए

डरो डरो

कतह- कही

उमविगव- उमवगव

भविगव

धोन/धोखन धोएन

गप/गप्प

के के

दवरँज्जा/ दवरँजा

ठाम

धवि तक

घूवि नौठि

थोवरँक

रँड्ड



मानुषीमिह संस्कृतम्

तौ/ तूँ

तौँहि पद्यमे त्राह)

तौँही/तौँहि

कवरौंगए कवरौंगये

एकेठ्ठा

कवितथि कवतथि

पहँचि पहँच

वाखनहि वखनहि

नगनहि नागनहि

सुनि (उँचावण सुगन)

खुँछि (उँचावण खुँछ)

एनथि गेनथि

रितउने रितेने

कवरौंगनहि/ कवेनथिन्ह

कवएनहि

खाकि कि

पहँचि पहँच

जवाय/ जवाए जवा (खागि नगा)

से से

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिउमे छँठा कए)

खेन खेन





मानुषीमिह संस्कृतम्

हृगन(spaci ous) फ़ैन

होयतन्हि/ होधतन्हि हेतन्हि

हाथ मर्टिश्चायरँ/ हाथ मर्टियारँय

हेका हेका

देखाए देखा

देखाय देखा

सतुवि सतुव

साहेरँ साहेरँ

१७. VI DEHA FOR NON RESI DENT MAI THI LS

VI DEHA M THI LA TI RBHUKTI TI RHUT---

Ur uvel a Kassapa is said to have been, in a previ ous bi r t h., a ki ng of Vi deha.

Mahavi ra spent no less than six rai ny seasons at M t h i l a. Buddha did not spent any rai ny season in Vi deha.

Aj l vi ka, Guna Kassapa , vi ews l i ke Maskari n Gosala lived in a deer park adjoi ni ng M t h i l a.

Vi deha had a l ong tradi ti on of Brahma ni cal l ear ni ng. Upani shadi c phi l osophy and expensi ve sacri fi ces.



मानुषीमिह संस्कृतम्

The conquest of Videha by Magadha was accomplished by Mahapadma Nanda, the founder of the Nanda dynasty, which possessed immense wealth and a huge army capable of frightening a formidable foreign invader like Alexander the Great (356 B.c.– 323 B.c.) in the reign of his sons.

TI RABHUKTI CIRCA 347 B.C.–A.D. 319

Videha under the Magadhan empire was successively ruled by kings of three dynasties, the Nandas (347 b.c.–325 b.c.), the Mauryas (325 b.c.–188 b.c.) and the early Sungas (188 B.C.circa 120 b.c.). The Mithila king (i.e., the king of Mithila) had been defeated by Nandas. Kautilya mentions a word Videhaka. 'trader' or 'merchant', 'product of a Vaishya male and a Brahmana female'. Panini knows the Vrijis only. By the time of Kautilya (last quarter of the fourth century B.c) there was a partition between the Lichchhavis Vrijis.

Pushyamitra Sunga (188 b.c.–152 b.c.), his contemporary the great grammarian Patanjali mentions Videha in his Mahahashya.



मानुषीमिह संस्कृतम्

Agni mitra, the son and successor of Pushyamitra, continued to rule over North Bihar including Videha, the discovery of a terracotta sealing (in grey colour, circular in area) in the Garh area of Basarh. Vaisali became independent under the resurgent Licchavis; and soon they freed Videha too and governed it for themselves till the second Magadhan empire (Guptas).

(c) २००+ सराधिकार सुवर्षित। रिदेहमे प्रकाशित सभंठा वचना आ आकारिक/अंग्रेजी-संस्कृत अनुरादक सराधिकार वचनाकार आ संग्रहकतकि नगमे छुहि। वचनाक अनुराद आ पुनः प्रकाशिन किंरा आकारिक उपायोगक अधिकार किनरौक हेतु ggajendra@videha.co.in पव संपर्क कर। एहि सागठकेँ प्रीति ना ठाकर, मधुनिका चौधरी आ बश्मि प्रिया द्वारा डिजागन कएन गेल।

सिंहिबन्धु